तुर्की के दुश्मन के घर में शेर की तरह ... पेज 5

दैनिक कारखाने का सफर

मुकाबले के चक्कर में आदमी का जीवन एक कारखाने के समान हो गया है, आदमी का सबसे विश्वसनीय अखबार

हरिद्वार के मनसा देवी का चमत्कार!... पेज 7

वर्ष 6, अंक 348 | भोपाल, शनिवार 30 मई, 2026 | ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष, चतुर्दशी 2083 | मूल्य 2 रुपए

वर्ष 2028 में भोपाल में आयोजित होने वाले वर्ल्ड रोज कन्वेंशन के बारे में मप्र रोज सोसायटी ने राज्यपाल से की सौजन्य भेंट

- राज्यपाल को मप्र रोज सोसायटी ने चीन के नान्यांग में आयोजित रोज कन्वेंशन में भाग लेकर लौटने तक की पूरी जानकारी दी
- मप्र रोज सोसायटी ने बताया कि जनवरी 2027 से भोपाल में आयोजित होने वाले वर्ल्ड रोज कन्वेंशन वर्ष 2028 के लिए रजिस्ट्रेशन शुरू हो जाएंगे
- वर्ष 2028 में भोपाल में आयोजित होने वाले वर्ल्ड रोज कन्वेंशन पूरे भारत के साथ ही एशिया के लिए गौरव की बात है, क्योंकि यह पहली बार आयोजित हो रहा है
- भोपाल के सुशील प्रकाश वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ़ रोज सोसायटी के अध्यक्ष हैं, जिन्होंने राज्यपाल को तैयारियों के बारे में जानकारी दी

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

म. प्र। रोज सोसायटी के प्रतिनिधिमंडल ने शुक्रवार को मध्य प्रदेश के राज्यपाल मंगुभाई पटेल, जो की मप्र रोज सोसायटी के मुख्य संरक्षक भी है, के साथ सौजन्य भेट की । उन्हें मप्र रोज सोसायटी ने अपने चीन के नानयांग के प्रवास के बारे मे विस्तृत रूप से बताया । सोसायटी के सदस्य सुशील प्रकाश व एसएस गद्रे के साथ चीन के नान्यांग में आयोजित रोज कन्वेंशन में भाग लेने गए थे। राज्यपाल ने वहां गए मप्र रोज सोसायटी के सदस्यों को बधाई दी। राज्यपाल ने यह भी पूछा की वर्ष 2028 में भोपाल आयोजित होने वाले वर्ल्ड रोज कन्वेंशन के लिए रजिस्ट्रेशन कब शुरू होगा । सुशील प्रकाश जो वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ़ रोज सोसायटी के अध्यक्ष भी हैं उन्होंने बताया कि रजिस्ट्रेशन अगले वर्ष जनवरी में शुरू होगा । सोसायटी के अध्यक्ष एसएस गद्रे ने उन्हें अगले वर्ष जनवरी में होने वाले 46 वे गुलाब प्रदर्शनी के पारितोषिक वितरण समरोह के मुख्य अतिथि बनने हेतु आमंत्रित किया, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। प्रतिनिधिमंडल के अन्य सदस्य थे अविनाश गलांडे, मानद सचिव तथा शैलेश अग्रवाल कोषाध्यक्ष ।

वर्ल्ड रोज कन्वेंशन के लिए व्यापक तैयारियां : भोपाल में आयोजित होने वाले वर्ल्ड रोज कन्वेंशन के लिए व्यापक तैयारियां शुरू हो चुकी हैं । मप्र रोज सोसायटी के द्वारा भेल का जवाहर गुलाब उद्यान, विधान सभा का गुलाब उद्यान और मिंटो हाल का गुलाब उद्यान के साथ ही राजधानी के कई और गुलाब उद्यान में तैयारी शुरू कर दी है। भेल के जवाहर गुलाब उद्यान को कंपनी के डायरेक्टर दिल्ली से ही रोज सोसायटी के निर्देश पर ही इसे तैयार करवा रहे हैं। विश्व स्तर के तैयार हो रहे इस गुलाब उद्यान में साढ़े चार सौ से ज्यादा गुलाब के पौधे लगाए गए हैं, जिसे रोज सोसायटी ने ही उपलब्ध कराया है। जबकि विधान सभा और मिंटो हाल ने भी तैयारी शुरू कर दी है।

पूरे शहर में सैकड़ों स्थानों पर लगेंगे गुलाब के पौधे : वर्ल्ड रोज कन्वेंशन के लिए के पूरे शहर में कई डिवाइडर और सड़क किनारे बगीचों में भी विश्व स्तर पर गुलाब के पौधों से तैयार किया जाएगा। इसके लिए वर्ल्ड रोज सोसायटी के अध्यक्ष सुशील प्रकाश और मप्र रोज सोसायटी के अध्यक्ष एसएस गद्रे लगातार अपनी टीम के साथ तैयारियो में जुट गए हैं। मप्र रोज सोसायटी अब तक विश्व में कई देशों में आयोजित रोज कन्वेंशन में भाग लेकर पूरी जानकारी ले चुके हैं। एसएस गद्रे के अनुसार पूरा प्रयास है कि यहां का वर्ल्ड रोज कन्वेंशन भी किसी देश से कम न हों। इस वर्ल्ड रोज कन्वेंशन के लिए विश्व के कई देशों के प्रतिनिधि भोपाल आएंगे।

हर रविवार साहित्यिक विशेषांक

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल झीलों की नगरी के साथ ही साहित्यिक-सांस्कृतिक शहर के रूप में भी जाना जाता है। यहां विश्व विख्यात साहित्यकार पैदा हुए या साहित्यकारों की कर्म स्थली है। अफसोस इस बात का है कि मंचों की भरमार होने के बाद भी समाचार पत्रों में उचित स्थान नहीं मिला। दैनिक कारखाने का सफर अखबार प्रयास कर रहा है कि हर साहित्यकार को अखबार में स- सम्मान स्थान देकर उनका सम्मान करें। इसके लिए प्रयास कर रहे हैं कि हर रविवार पूरा एक पेज साहित्य को समर्पित करें। इसमें सहयोग सभी साहित्यकार दें, तभी हमारा यह प्रयास सफल होगा। अतः अपनी रचनाएं शुक्रवार या शनिवार दोपहर तक अवश्य भेज दें।

धन्यवाद

संपादक दैनिक कारखाने का सफर भोपाल

मोदी के 'मेलोडी' गिफ्ट से प्रेरित हुए योगेंद्र, अनाज के दानों से बनाई 'जॉर्जिया मेलोनी' की खूबसूरत तस्वीर

दैनिक कारखाने का सफर। नर्मदापुरम

मध्य प्रदेश के नर्मदापुरम के सुपरली गांव के किसान योगेंद्र पाल सिंह सोलंकी ने अनाज के दानों और मेलोडी चॉकलेट का इस्तेमाल करके इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी की एक अनोखी कलाकृति तैयार की है। दरअसल हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी विदेश यात्रा के दौरान इटली की पीएम जॉर्जिया मेलोनी को भारत में लोकप्रिय 'मेलोडी चॉकलेट' का पैकेट उपहार में दिया था। सोशल मीडिया पर चर्चा में रहे इसी वाकये से प्रेरित होकर किसान योगेंद्र पाल सिंह ने अपनी कला के जरिए इस दृश्य को अनाज और चॉकलेट के कॉम्बिनेशन से कैनवास पर उकेरा है।

नर्मदापुरम के किसान योगेंद्र पाल पहले भी अनाज के दानों से कई आकर्षक और सुंदर तस्वीरें बना चुके हैं। इस बार उन्होंने वैश्विक मंदी और आर्थिक चुनौतियों के दौर में सादगी, स्वदेशी भावना और स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने के संदेश से प्रेरित होकर यह नई कलाकृति बनाई है, जो इस समय पूरे अंचल में चर्चा का विषय बनी हुई है। किसान योगेंद्र बताते हैं कि पीएम मोदी द्वारा जॉर्जिया मेलोनी को भेंट की गई चाकलेट साधारण उपहार नहीं मानना चाहिए। भारतीय संस्कृति, परंपरा और आत्मीयता का प्रतीक था। महंगे विदेशी उपहार के बजाय भारत में बने घरेलू उत्पाद को भेंट करना अत्यंत प्रेरणादायक संदेश देता है। हमारी भारतीय सनातनी परंपरा में यह मान्यता रही है कि जब परिवार या समाज आर्थिक चुनौतियों से गुजर रहा हो, तब दिखावे और फिजूलखर्ची से बचते हुए सादगी और आत्मनिर्भरता को अपनाया जाए।

समाचार संपादक की कलम से

–राहुल कौशिक

सोशल मीडिया, अभिव्यक्ति की आज़ादी और देशहित — आज के भारत की सबसे बड़ी बहस

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

आज के समय में देश के अंदर एक बात सबसे ज्यादा सुनने को मिलती है कि “भारत में बोलने की आज़ादी खत्म हो रही है”, “सरकार तानाशाही कर रही है” या “लोकतंत्र खतरे में है।” सोशल मीडिया, YouTube और विदेशी प्लेटफॉर्म पर बैठे कई लोग लगातार इस तरह की बातें कर रहे हैं। लेकिन सवाल यह है कि आखिर “आज़ादी” की सीमा क्या होनी चाहिए और देशहित के ऊपर कोई भी व्यक्ति या एजेंडा कैसे रखा जा सकता है?

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। यहां आज भी सरकार के खिलाफ खुलकर बातें होती हैं, विपक्ष प्रेस कॉन्फ्रेंस करता है, YouTubers रोज सरकार की आलोचना करते हैं, सोशल मीडिया पर लाखों पोस्ट डाली जाती हैं और चुनावों में जनता खुलकर अपनी राय देती है। अगर वास्तव में बोलने की आज़ादी खत्म हो गई होती, तो क्या यह सब संभव होता?

आज कुछ ऐसे YouTubers और सोशल मीडिया एक्टिविस्ट हैं जो देश के बाहर बैठकर भारत के खिलाफ माहौल बनाने की कोशिश करते हैं। उन्हें भारत की जमीनी सच्चाई का पूरा ज्ञान नहीं होता, लेकिन फिर भी वे हर सरकारी फैसले को गलत साबित करने में लगे रहते हैं। कभी कहते हैं कि “देश खत्म हो गया”, कभी कहते हैं “लोकतंत्र मर गया”, तो कभी भारत की तुलना ऐसे देशों से करते हैं जिनकी परिस्थितियां बिल्कुल अलग हैं। यह केवल आलोचना नहीं बल्कि कई बार भ्रम फैलाने जैसा लगता है।

अगर कोई व्यक्ति वास्तव में “तानाशाही” देखना चाहता है तो उसे उन देशों को भी देखना चाहिए जहां सरकार के खिलाफ बोलना ही अपराध माना जाता है। भारत में आज भी लोग खुलकर सरकार की आलोचना करते हैं, कोर्ट में जाते हैं, मीडिया में बहस करते हैं और चुनाव में सरकार बदलने की ताकत जनता के पास है। यही लोकतंत्र की असली पहचान है।

आज सोशल मीडिया पर एक नई “कॉकरोच पार्टी” भी देखने को मिल रही है। जैसे अंधेरे में कॉकरोच हर जगह फैल जाते हैं, वैसे ही कुछ लोग हर मुद्दे में केवल नकारात्मकता फैलाने का काम कर रहे हैं। देश कोई भी उपलब्धि हासिल करे, कोई बड़ा निर्णय ले या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मान पाए — ये लोग उसमें भी कमी निकालने और भ्रम फैलाने में लगे रहते हैं। इनका उद्देश्य समाधान देना कम और माहौल खराब करना ज्यादा दिखाई देता है।

सरकार की आलोचना लोकतंत्र का हिस्सा है, लेकिन देश को कमजोर दिखाना, विदेशों में बैठकर भारत विरोधी नैरेटिव बनाना और युवाओं के अंदर भ्रम फैलाना अभिव्यक्ति की आज़ादी नहीं कहा जा सकता। सोशल मीडिया का उपयोग जिम्मेदारी के साथ होना चाहिए, क्योंकि लाखों लोग इन बातों से प्रभावित होते हैं।

अन्ना हजारे आंदोलन के समय पूरे देश ने भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाई थी। उसी आंदोलन से आगे चलकर नई राजनीति पैदा हुई और आम आदमी पार्टी बनी। जनता ने उम्मीदों के साथ समर्थन दिया, लेकिन बाद के वर्षों में लोगों ने दिल्ली की राजनीति और उसके परिणाम भी देखे। लोकतंत्र में जनता सब देखती है और समय आने पर जवाब भी देती है।

आज जरूरत इस बात की है कि देश के अंदर देश की बात हो। राजनीतिक मतभेद हो सकते हैं, सरकार की नीतियों पर चर्चा हो सकती है, लेकिन देश को बदनाम करना या विदेश में बैठकर भारत विरोधी माहौल बनाना किसी भी जिम्मेदार नागरिक का काम नहीं हो सकता। अभिव्यक्ति की आज़ादी का मतलब देशहित से ऊपर जाना नहीं होता।

भारत आज दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो रहा है, वैश्विक स्तर पर उसकी पहचान मजबूत हो रही है और हर क्षेत्र में देश आगे बढ़ रहा है। ऐसे समय में समाज को बांटने वाली नकारात्मक सोच से ज्यादा जरूरी है एक मजबूत, जागरूक और जिम्मेदार लोकतंत्र का निर्माण करना।

ट्विशा केस-सास और पति 5 दिन की CBI रिमांड पर, आखिरी घंटों का वर्चुअल रीक्रिएशन करेंगे

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल में सीबीआई गिरिबाला सिंह और समर्थ को अलग-अलग गाड़ियों में लेकर कोर्ट पहुंची थी। इधर, ऋषिकेश के त्रिवेणी घाट पर गंगा नदी में ट्विशा की अस्थियां विसर्जित की गई। एक्ट्रेस और मॉडल ट्विशा शर्मा मौत मामले में सीबीआई ने शुक्रवार को सास रिटायर्ड जज गिरिबाला सिंह और पति समर्थ सिंह को स्पेशल कोर्ट में पेश किया। जांच एजेंसी ने दोनों की 5-5 दिन की पुलिस रिमांड मांगी, जिसे कोर्ट ने मंजूर कर लिया। आरोपी पक्ष के वकील ने भी रिमांड का विरोध नहीं किया। सीबीआई ने कोर्ट में पेश पीआर आदेश में कहा कि समर्थ सिंह और गिरिबाला सिंह जांच में सहयोग नहीं कर रहे हैं। एजेंसी के मुताबिक, दोनों के अलग-अलग बयानों में विरोधाभास सामने आया है। ऐसे में दोनों को आमने-सामने बैठाकर पूछताछ करना जरूरी है। सीबीआई ने यह भी कहा कि मामले से जुड़े अहम सबूत जुटाने के लिए दोनों आरोपियों की पुलिस रिमांड आवश्यक है। समर्थ सिंह पहले से 7 दिन की सीबीआई रिमांड पर था। शुक्रवार को रिमांड खत्म होने के बाद उसे दोबारा कोर्ट में पेश किया गया। दोपहर 12:34 बजे से 2:08 बजे तक दोनों आरोपी कोर्ट रूम में मौजूद रहे। इसके बाद सीबीआई टीम उन्हें अपने साथ लेकर रवाना हो गई। सूत्रों के मुताबिक, रिमांड के दौरान सीबीआई गिरिबाला सिंह और समर्थ सिंह को आमने-सामने बैठाकर पूछताछ करेगी। जांच एजेंसी समर्थ से यह भी पूछेगी कि फरारी के दौरान वह कहां रहा और किन लोगों के संपर्क में था। सीबीआई सूत्रों के अनुसार, जांच में अब 'टनल व्यू इन्वेस्टिगेशन' तकनीक का इस्तेमाल किया जाएगा। इसके तहत एजेंसी ट्विशा के आखिरी घंटों का वर्चुअल रीक्रिएशन तैयार कर रही है। इसका मकसद घटना से पहले और बाद की हर गतिविधि को मिनट-दर-मिनट समझना है, ताकि मौत से जुड़ी परिस्थितियों की पूरी तस्वीर सामने आ सके।

स्मृति शेष..! अपनी कलम से कमाल के कलाम पेश करने वाले बद्र साहब जैसे शायर बिदा होते हैं अलबिदा नहीं

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मैं मकबूल शायर पद्मश्री डॉ.बशीर बद्र साहब पर कुछ लिखने से पहले एक़ बात साफ कर दूँ की मैं उन्हें खूब जानता था परन्तु वे मुझे बिलकुल नहीं जानते थे, मैंने उन्हें कई बार पढ़ा और मंचों से सुना और दो- तीन बार उनसे मुलाकातों और बातों का सिलसिला भी हुआ परन्तु एक़ लेखक और पाठक की हैसियत से, | एक़ बार उनसे मुलाक़ात मेरे मित्र कीर्तिशेष डॉ. बाबूराव गुजरे के साथ हुई थी ज़ब हम उनसे मिलने शाहजहाँनाबाद परी बाजार गोलघर स्थित उनके घर उनसे मिलने प्रोफेसर श्री अक्षयकुमार जैन अध्यक्ष हिंदी मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के कहने पर करवट कला परिषद के।सदर मंज़िल में होने वाले एक़ आयोजन के सिलसिले में बतौर अतिथि आमंत्रित करने गये थे, हम एक़दम नये लोग नई संस्था परन्तु शायरी की किताब थी करवट प्रकाशन से छपी थी और लेखक का मन था सो डरते- डरते बद्र साहब के घर पहुंचे की इतना नामचीन शायर भला क्या हमारे निमंत्रण को स्वीकार करेगा, परन्तु आश्चर्य उन्होंने न सिर्फ हमारा निमंत्रण स्वीकारा बल्कि वे लोकार्पण कार्यक्रम में आये पूरे समय ठहरे भी , फिर दूसरी बार उनसे भेंट करने का सुयोग आकाशवाणी भोपाल के उद्घोषक और दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय के निदेशक राजुरकर जी के साथ मिलना उनसे मिलना हुआ,राजुरकर जी नवाचारी व्यक्ति थे, तरह तरह के नये नये काम उन्हें सूझते थे तो उन्होंने सोचा क्यों न एक़ जगह बद्र साहब के चुने हुए शेर बहुत कम क़ीमत में उनके पाठकों को मिलें तो उनके चुनिंदा शेरों को संकलित कर पड़ाव प्रकाशन के माध्यम से एक़ किताब निकालना चाहते थे, राजुरकर जी भी सशंकित थे की पता नहीं बद्र साहब अनुमति देंगे या नहीं देंगे या देंगे तो उनकी शर्तें क्या होंगी?क्योंकि उनकी किताबें बड़े- बड़े प्रकाशक छापते हैं और ऊँची रायल्टी देकर, फिर वही उम्मीद से दुगना फल मिला हमारा डर व्यर्थ था बद्र साहब ने न सिर्फ राजुरकर राज को किताब प्रकाशित करने की अनुमति दी बल्कि उनके इस प्रयास की प्रसंशा भी की और हमारी मेहमान नवाजी की और आगे भी निःसंकोच घर आते रहने को कहा | कल बशीर बद्र साहब नहीं रहे उनसे जुड़ी अनेक स्मृतियाँ आँखों में तैर रही हैं लगभग पंद्रह वर्षो तक याददाश्त खो जाने की बमारी के चलते उन्होने 91 वर्ष की लम्बी उम्र में इस फानी दुनियां को अलविदा कहा वे भरपूर जिए उनका आजमगढ से मेरठ होते हुए भोपाल का सफर संघर्षो से भरा रहा, और आखिर में ग़ालिब से लेकर दुष्यन्त का रिश्ता जिस शहर से रहा वह ग़ज़लकारों फनकारों का शहर बशीर साहब को ऐसा भाया की वो यहीं के होकर रह गये |

'उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो, न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाये ' / 'कुछ तो मजबूरियां रही होंगी, यूँ कोई बेबफा नहीं होता '/'हम दरिया हैं हमें अपना हुनर मालूम है '/ लोग टूट जाते हैं एक़ घर बनाने में ' / कोई हाथ भी न मिलाएगा जो मिलोगे तपाक से |' सहित बशीर साहब की गज़लों के ऐसे तमाम शेर हैं जो आज बच्चों -बच्चों की जुबान पर हैं, यह शेर आपको पूरे हिंदुस्तान के किसी भी गाँव कस्बे और शहर की सड़कों पर दौड़ती गाड़ियों, बसों, ट्रकों, होटल के ढाबों पर लिखे मिल जायेंगे यानि जो शायरी गाड़ी ड्राइवरों,ढाबों और सड़कों पर काम करने वाले मजदूरों की जुबान पर चढ़ जाये,शायरी में कही गई बात सबको अपनी सी लगे वही शायरी कविता या लेखन आम आदमी की भाषा में आम आदमी के लिये लेखन होता है, और यह काम असल में किया था पद्मश्री डॉ. बशीर बद्र साहब ने | प्यार दोस्ती आपसी रिश्ते मोहब्बत का पैगाम उनके एक़ एक़ शब्द से जादू बनकर टपकता था।

गतांक से आगे : लोक कल्याण हेतु दादाजी का अवतरण

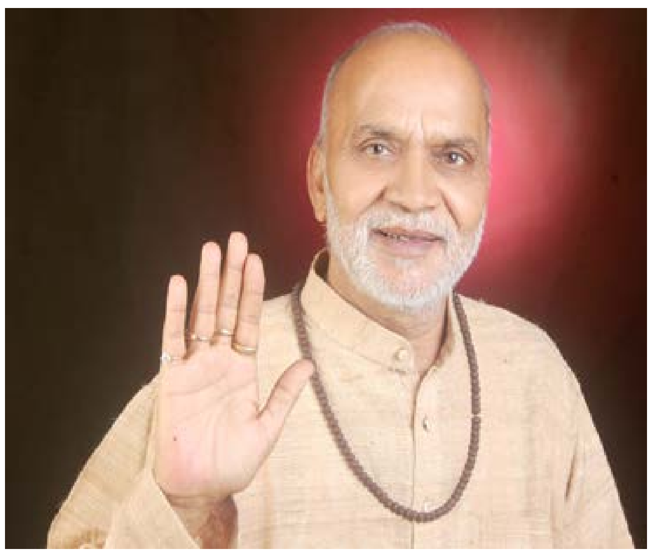

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

दादाजी गुरुदेव की कृपा से भक्त गिरिराज वशिष्ठ का जीवन परिवर्तन मैं गिरिराज वशिष्ठ, आगरा (उत्तर प्रदेश) का निवासी हूँ। वर्ष 1993 का समय मेरे जीवन का अत्यंत कठिन दौर था। मानसिक तनाव, पारिवारिक एवं सामाजिक परिस्थितियों ने मुझे भीतर तक विचलित कर दिया था। मैं इतना अधिक परेशान था कि जीवन की दिशा ही मानो समाप्त हो गई थी। मन में निराशा, भय और अस्थिरता ने घर कर लिया था। उसी समय आगरा निवासी श्रद्धेय मिश्रा जी ने मुझे सलाह दी कि मैं भोपाल जाकर दादाजी गुरुदेव के दर्शन करूँ। उन्होंने बताया कि दादाजी गुरुदेव पुष्पा नगर, भोपाल में विराजमान हैं तथा उनकी कृपा से असंख्य लोगों के जीवन में सुख, शांति और नई दिशा प्राप्त हुई है।उनकी प्रेरणा से मैं ट्रेन द्वारा भोपाल पहुँचा। भोपाल रेलवे स्टेशन पर उतरने के पश्चात स्नान आदि से निवृत्त होकर ऑटो से पुष्पा नगर स्थित दादाजी गुरुदेव के दरबार के लिए रवाना हुआ। प्रातःकाल का समय था। जब मैं वहाँ पहुँचा तो लगभग 15 श्रद्धालु भक्त वहाँ बैठे हुए थे। मैंने विनम्रतापूर्वक पूछा कि "दादाजी गुरुदेव से मिलना है और उनका आशीर्वाद प्राप्त करना है।" तब कुछ भक्तों ने मुस्कुराते हुए कहा यही दादाजी गुरुदेव हैं, जो आपसे बात कर रहे हैं। मैंने श्रद्धापूर्वक दादाजी गुरुदेव के चरण स्पर्श किए और कहा कि मुझे आगरा के मिश्रा जी ने आपके पास भेजा है।" दादाजी गुरुदेव ने अत्यंत सहज भाव से कहा अच्छा, ठीक है। उस दिन सावन मास का प्रथम सोमवार था। थोड़ी ही देर में भगवान शिव एवं शिव परिवार के पूजन अभिषेक की तैयारियाँ प्रारंभ हो गईं। सभी भक्तजन सेवा कार्यों में लग गए। कोई सफाई कर रहा था, कोई दरी बिछा रहा था, तो कोई पूजन सामग्री व्यवस्थित कर रहा था। मैं भी सेवा भाव से उन कार्यों में सम्मिलित हो गया। सेवा करते हुए मन को अद्भुत शांति और आनंद की अनुभूति होने लगी।

कुछ समय पश्चात पंडित जी द्वारा काली मिट्टी से भगवान शिव एवं शिव परिवार की सुंदर प्रतिमाएँ तैयार की गईं। वातावरण पूर्णतः भक्तिमय हो चुका था। दादाजी गुरुदेव अपनी धर्मपत्नी एवं समस्त भक्तों की गुरुमाता श्रद्धेय श्रीमती राधा नामदेव जी के साथ पूजन स्थल पर विराजमान थे। तभी दादाजी गुरुदेव ने स्नेहपूर्वक कहा आओ वशिष्ठ जी, अभिषेक में बैठो।" यह मेरे लिए अत्यंत सौभाग्य का क्षण था। दादाजी गुरुदेव ने मुझे अपने समीप बैठाकर पूजन एवं अभिषेक का अवसर प्रदान किया।

वहाँ उपस्थित अनेक भक्तों ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा कि हम इतने समय से दादाजी के साथ हैं, परंतु हमें अभी तक अभिषेक में बैठने का अवसर नहीं मिला, और आपको प्रथम बार में ही यह सौभाग्य प्राप्त हो गया। आपका कार्य तो अवश्य ही पूर्ण हो जाएगा।अभिषेक के पश्चात दादाजी गुरुदेव अपने आसन पर विराजमान हुए और भक्तों की समस्याएँ सुनना प्रारंभ किया। सभी भक्त पंक्ति में खड़े होकर अपने क्रम की प्रतीक्षा कर रहे थे। लगभग आधे घंटे बाद मेरा क्रम आया। दादाजी गुरुदेव ने मुझसे पूछा आपकी क्या समस्या है? मैंने अपनी समस्त परेशानी उनके समक्ष निवेदित की तथा उस व्यक्ति के विषय में बताया जिससे मुझे विशेष कष्ट और मानसिक तनाव प्राप्त हो रहा था। दादाजी गुरुदेव ने दिव्य दृष्टि से स्थिति को समझा और बड़े दादाजी भगवान भृंगी ऋषि जी से प्रेरणा लेकर मुझे निर्देश दिया दो अगरबत्ती लगाकर उसी व्यक्ति के पास जाना जिससे तुम्हें परेशानी है। दादाजी गुरुदेव की आज्ञा मेरे लिए आदेश थी। उसी शाम मैं ट्रेन से आगरा के लिए रवाना हो गया। घर पहुँचने के पश्चात अगले दिन प्रातः मैंने श्रद्धा एवं विश्वास के साथ अगरबत्ती लगाई और उस व्यक्ति के पास पहुँच गया जिससे मुझे समस्या थी। आश्चर्यजनक रूप से वहाँ पहुँचते ही परिस्थिति पूर्णतः बदल गई। उस व्यक्ति ने मुझसे अत्यंत आत्मीयता से कहा तुम कहाँ थे इधर-उधर क्यों भटक रहे हो? यदि कोई परेशानी है तो बताओ, मैं तुम्हारी सहायता करता हूँ। जो व्यक्ति पहले मेरे लिए चिंता और कष्ट का कारण था, वही अब सहयोग और सद्भावना का व्यवहार करने लगा। यह परिवर्तन मेरे लिए किसी चमत्कार से कम नहीं था। धीरे-धीरे मेरा जीवन सामान्य होने लगा और मानसिक शांति प्राप्त होने लगी।कुछ समय बाद मैं जिस कंपनी से जुड़ा हुआ था, उसमें नए कार्यों की स्थापना मुंबई में होने लगी। जब मैंने इस विषय में दादाजी गुरुदेव से मार्गदर्शन माँगा कि क्या मुझे इस नए कार्य से जुड़ना चाहिए? तब दादाजी गुरुदेव ने कृपापूर्वक कहा मैनेजमेंट ठीक है। दादाजी गुरुदेव के आशीर्वाद से मेरे जीवन में उन्नति के नए मार्ग खुलते चले गए। उसके बाद मेरा यह नियमित नियम बन गया कि जब भी मुझे मुंबई जाना होता, मैं पहले भोपाल जाकर दादाजी गुरुदेव के दर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त करता, उसके बाद ही आगे की यात्रा करता था। दादाजी गुरुदेव के दर्शन से आत्मविश्वास, साहस और मानसिक शक्ति प्राप्त होती थी।

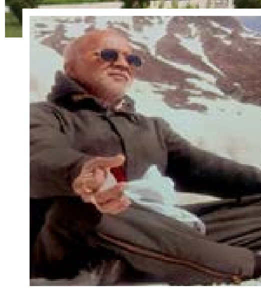

आज भी मैं यह अनुभव करता हूँ कि दादाजी गुरुदेव केवल एक संत नहीं, बल्कि लोक कल्याण हेतु अवतरित दिव्य शक्ति थे। उनके दरबार में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति केवल समाधान ही नहीं, बल्कि आत्मिक शांति, विश्वास और नई जीवन दिशा प्राप्त करता था। दादाजी गुरुदेव की करुणा, सरलता, दिव्यता और भक्तों के प्रति प्रेम अद्वितीय था। उनकी कृपा से असंभव प्रतीत होने वाली परिस्थितियाँ भी सहज रूप से अनुकूल बन जाती थीं।

एमपी में नौतपा के छठे दिन 6 जिलों में बारिश, देवास में ओले गिरे

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मप्र में नौतपा के छठे दिन फिर मौसम ने करवट ली है। रतलाम, झाबुआ, धार, मंदसौर, खंडवा समेत कई जिलों में शनिवार सुबह तेज हवाओं के साथ झमाझम बारिश हुई। देवास में ओले भी गिरे। तेज बारिश से सड़कों पर पानी भर गया। वहीं तापमान में कमी आने से लगातार पड़ रही भीषण गर्मी से भी लोगों को राहत मिली। देश के कई शहरों में इन दिनों टेम्परेचर 45 डिग्री सेल्सियस के पार है। इस मौसम में थोड़ी सी लापरवाही बच्चे की सेहत पर भारी पड़ सकती है। उनकी दिनचर्या और खानपान में कुछ बदलाव करके उन्हें हीट स्ट्रोक यानी लू से बचाया जा सकता है। पढ़ें पूरी खबर... जिले के जैतपुरा में सुबह 6 बजे से करीब दो घंटे तक झमाझम बारिश हुई। यहां कई दिनों से तापमान 41.6 डिग्री सेल्सियस था, इससे आज गर्मी से राहत मिली। जिले के पेटलावद, रायपुरिया और बामनिया अंचल में तेज हवाओं के साथ आधा घंटे बारिश हुई। इससे सड़कों पर पानी भर गया। सुबह करीब 7 बजे तेज आंधी के साथ बारिश शुरू हो गई। कई जगह ओले भी गिरे। धार जिले के कुक्षी से लगे बाग क्षेत्र में सुबह 9 बजे से मौसम बदल गया। यहां के घटबोरी, पिपलवा, घोट्यादेव में करीब 20 मिनट तक बारिश हुई। जिले के सीतामऊ, खजूरी आंजना, नाहरगढ़ और पिपलिया मंडी में भी सुबह तेज बारिश हुई। 25 मई से नौतपा की शुरुआत हुई है। पहले ही दिन से प्रदेश में भीषण गर्मी का दौर शुरू हुआ। 18 मई से ही खजुराहो-नौगांव सबसे गर्म बने हुए हैं। इस अवधि में यहां

अधिकतम तापमान रिकॉर्ड 47 डिग्री के पार पहुंच गया। मौसम विभाग के अनुसार, 30 मई को भी कुछ जिलों में नौतपा तपेगा, लेकिन इसके बाद अधिकांश जिलों में बारिश का दौर शुरू हो जाएगा।

मौसम विभाग की मानें तो 3 दिन, यानी 31 मई और 1-2 जून को प्रदेश में कहीं ओले गिरेंगे तो कहीं तेज आंधी के साथ बारिश हो सकती है। 31 मई को अधिकांश जिलों में आंधी-बारिश की चेतावनी जारी की गई है। 1-2 जून को भी ऐसा ही मौसम रहेगा। भोपाल में 14 साल में 7 बार नौतपा के दौरान बारिश दर्ज हुई, जबकि 2 बार बूंदाबांदी हुई। इस बार शुरुआत में ही बूंदाबांदी हो गई। 2018 और 2019 में सबसे ज्यादा तपिश रही, जब औसत तापमान 43 से ऊपर पहुंचा था।

इलेक्ट्रिक थैरेपी-बेड में शॉर्ट-सर्किट से लगी आग, बुजुर्ग झुलसे, भोपाल में दर्द से राहत के लिए लेटे थे, उठ नहीं सके, इलाज के दौरान मौत

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल में इलेक्ट्रिक थेरेपी मैट में शॉर्ट-सर्किट होने से 90 वर्षीय बुजुर्ग की मौत हो गई। हादसा 27 मई की दोपहर हुआ, जब थेरेपी बेड के इलेक्ट्रिक सिस्टम में अचानक स्पार्किंग हुई और आग भड़क गई। चलने-फिरने में असमर्थ बुजुर्ग गंभीर रूप से झुलस गए। अस्पताल में इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। ईंटखेड़ी थाना प्रभारी आशीष स्प्रे ने बताया कि मृतक ग्लैडविन सहाय पीठ दर्द की समस्या से परेशान थे। इसके चलते वे घर में इलेक्ट्रिक थेरेपी मैट वाले बेड का उपयोग करते थे। यह सिस्टम बैटरी और मोटर से संचालित था। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि बेड के इलेक्ट्रिक सिस्टम में शॉर्ट-सर्किट होने से स्पार्किंग हुई और आग लग गई। घटना के समय परिवार के सदस्य घर पर मौजूद थे। परिजन तुरंत उन्हें अस्पताल लेकर पहुंचे,

लेकिन उन्हें बचाया नहीं जा सका। पुलिस के मुताबिक, यह कोई विस्फोट नहीं था। शुरुआती जांच में बैटरी और इलेक्ट्रिक सिस्टम में खराबी के कारण आग लगने की बात सामने आई है। मामले की तकनीकी जांच कराई जा रही है।

मृतक के बेटे अराध्य सहाय ने बताया कि पिता की थेरेपी के लिए इलेक्ट्रिक मैट और अन्य सहायक उपकरण लगाए गए थे। सुबह और दोपहर में अलग-अलग समय पर उनका उपयोग किया जाता था। इसी दौरान हादसा हो गया। एक मेडिकल हेल्थ डिवाइस होता है, जिसे शरीर के दर्द, जकड़न और बेड सोल (घाव) जैसी समस्याओं में राहत देने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यह सामान्य गद्दे या चटाई जैसा दिखता है, लेकिन इसके अंदर इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम लगा होता है।

तलाब में युवती ने छलांग लगाई, दो दोस्तों के साथ घूमने आई थी, फोन पर बात न हो पाने से तनाव में होने की आशंका

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल के वीआईपी रोड स्थित बड़े तालाब में शुक्रवार सुबह एक युवती के कूदने की सूचना मिलते ही इलाके में हड़कंप मच गया। सूचना पर नगर निगम के गोताखोर तत्काल मौके पर पहुंचे और रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया। गोताखोर मोहम्मद इमरान, शेख आसिफ और आमिर की टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद युवती को पानी से बाहर निकाला और तुरंत तलैया थाना पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस ने युवती को तत्काल अस्पताल भिजवाया, जहां उसकी स्थिति को लेकर आधिकारिक पुष्टि अभी नहीं हो सकी है। पुलिस से मिली प्रारंभिक

जानकारी के अनुसार युवती की पहचान मनीषा के रूप में हुई है, जो बैरागढ़ क्षेत्र की निवासी बताई जा रही है। परिजनों के मुताबिक वह पिछले कुछ समय से पारिवारिक परेशानियों से जूझ रही थी।

थाना प्रभारी दीपक डहरिया ने बताया कि प्रारंभिक जानकारी के मुताबिक युवती सुबह करीब 8 बजे अपने दो दोस्तों के साथ वीआईपी रोड पर घूमने आई थी। इसी दौरान वह किसी को फोन लगाने की कोशिश कर रही थी, लेकिन बात नहीं हो पा रही थी, जिससे वह तनाव में आ गई। इसी दौरान उसने अचानक तलाब में छलांग लगा दी। पुलिस का कहना है कि अभी तक युवती और उसके साथ मौजूद लोगों के बयान दर्ज नहीं किए जा सके हैं। मामले की वास्तविक स्थिति बयान सामने आने के बाद ही स्पष्ट हो पाएगी। फिलहाल पुलिस सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए जांच कर रही है।

गायत्री प्रज्ञा पीठ बरखेड़ा में आयोजित प्रतिभा जागरण शिविर में पुलिस अधिकारियों ने दिए टिप्स

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

गायत्री प्रज्ञा पीठ बरखेड़ा में आयोजित प्रतिभा जागरण शिविर (27 मई से 31 मई 2026) के तृतीय दिवस में प्रतिदिन किए जाने वाले कार्यक्रमों — योग, प्राणायाम, अच्छा इंसान बनने के सूत्र, गायत्री मंत्र एवं उसके प्रभाव तथा डफली वादन प्रशिक्षण — के अतिरिक्त पुलिस विभाग से आए जय सिंह तोमर , आर.आई., जिला भोपाल द्वारा बच्चों को ट्रैफिक नियमों, हेलमेट पहनने के लाभ, आपातकालीन स्थिति में क्या करना चाहिए तथा संविधान एवं कानून के महत्व के विषय में बहुत ही आकर्षक ढंग से जानकारी दी गई। बच्चों ने भी कई प्रश्न पूछकर अपनी शंकाओं का समाधान प्राप्त किया।

पुलिस विभाग से ही सपना त्रिवेदी, सूबेदार एवं भावना भारद्वाज , जो कि ब्राइट माइंड संस्था की प्रशिक्षक हैं, द्वारा बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों की आवश्यकता, गुड एवं बैड टच तथा सूंघकर वस्तुओं एवं रंगों की पहचान कैसे की जाती है आदि विषयों पर बहुत ही रोचक ढंग से समझाते हुए प्रेरित किया गया।

प्रशिक्षण शिविर में संचालित बाल संस्कारशाला एवं अन्य स्थानों से पधारे 150 से अधिक छात्र-छात्राएं प्रतिदिन इस प्रशिक्षण का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। बाल संस्कारशाला के संचालक अनिल कछावा ने मिशन द्वारा लोककल्याणार्थ चलाई जा रही गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी दी।

गायत्री प्रज्ञा पीठ बरखेड़ा के मुख्य प्रबंध ट्रस्टी शिवनारायण सिंह राजपूत द्वारा अतिथियों का आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम का समापन तंबाकू निषेध दिवस 31 मई को राजेश पटेल, गायत्री परिवार ज़ोन समन्वयक, मध्य प्रदेश की गरिमामयी उपस्थिति में किया जाएगा।

विभिन्न विषयों पर निबंध संग्रह - "स्वप्न भंग का अनवरत सिलसिला"

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

डॉ अशोक व्यास जी के निबंध संग्रह " स्वप्न भंग का अनवरत सिलसिला " में कुल 24 निबंध है। इस निबंध संग्रह में लेखक ने समाज, संस्कृति, शिक्षा, राजनीति, आर्थिक नीति, तकनीकी, मनोविज्ञान, परंपरा और मानवीय संबंधों जैसे विभिन्न विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है। हिंदी भाषा की दशा और दुर्दशा पर सर्वाधिक आलेख है, जिसमें उन्होंने हिंदी के बारे में अपनी चिंता के साथ सुधार के लिए कुछ सुझाव भी दिए हैं। यह लेख उन्होंने तब लिखे हैं , जब वह सेवा में विभागीय समिति के हिंदी विभाग के सचिव रहते हुए लिखे थे। उनके सुझावों को निश्चित ही संस्था ने विभाग में पालन किया होगा।

लेखक मूलतः व्यंगकार है , इसका आभास उनके कुछ लेखों को पढ़ने पर होता है। संग्रह का पहला आलेख "आज के संदर्भ में दामाद की स्थिति" में तो यह स्पष्ट प्रतीत होता है। कुछ आलेखों में लेखक के गंभीर चिंतन एवं सामाजिक घटनाओं पर सूक्ष्म दृष्टि का अवलोकन परीक्षित होता है। "दुख में घबराना और सुख में बौराना" शीर्षक से निबंध में " सुख का मजा तो लेते ही हैं कभी-कभी दुख में भी मजा आने लगता है जबकि हमारी तलाश तो आनंद की होनी चाहिए। आनंद सुख और दुख के बीच में कहीं छुपा हुआ है। " चिंतन करने योग्य है। "बढ़ता हुआ पर्यावरण प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग" में लेखक ने अपनी चिंता व्यक्त करते हुए लिखा है कि "प्राकृतिक संसाधनों का बिना सोचे समझे दोहन करते जाना अंततः हमें कहां ले जाएगा हम नहीं जानते या जानना नहीं चाहते अगर जान भी लेते हैं तो शुतुरमुर्ग की तरह रेत में मुँह छुपा कर उससे मुँह चुराना चाहते हैं।" इसी लेख में आपने पॉलिथीन का अत्यधिक प्रयोग पर चिंता व्यक्त करते हुए सुझाव दिया है कि "हमें चोर के बजाय चोर की मां को पकड़ना होगा अर्थात जहाँ से बनता है, सरकार जिसे बनाने का लाइसेंस देती है तो कार्यवाही वहाँ होनी चाहिए, छुटपुट और फुटकर कारोबारी के यहां छापा मारने से समस्या हल नहीं होगी।"

"भारतीय गणतंत्र और वर्तमान परिदृश्य" में आपने एक जगह लिखा है कि " हमारे संविधान निर्माताओं ने हमें विश्व की सर्वश्रेष्ठ शासन पद्धति सौंपी थी जिसके योग्य हम अपने आप को शायद साबित नहीं कर पाए सिर्फ वोट डालने से ही हमारे कर्तव्यों की इतिश्री नहीं हो जाती . हमारी उपलब्धियों के खाते में गणतंत्र से गड़बड़ तंत्र और गड़बड़ तंत्र से गुंडा तंत्र तक शानदार असफलताएं दर्ज है। इस देश की वर्तमान तस्वीर को बनाने में हमें कई रंगों का प्रयोग किया गया है लेकिन एक ही रंग है जो ज्यादा उभर कर सामने आता है वह है हिंसा का रंग, लाल रंग, खून से सना हुआ।" बंगाल के चुनावों में हमने पहले भी देखा है , और अभी भी देख ही रहे हैं। इसी लेख में सरकार की घोषणाओं पर कटाक्ष करते हुए लिखा है कि " एक जुमला है जो सरकारी घोषणाओं, बयानों में उछाला जाता है कि देश इस समय संकट के दौर से गुजर रहा है या की यह संक्रमण काल है, पर संकट या संक्रमण काल कभी समाप्त क्यों नहीं होता है या यह जुमले की ओट है जिसके पीछे हम अपनी असफलता की शुतुरमुर्गी गर्दन छुपा लेते हैं। राजनीति का यह एक पैटर्न बन गया है," यह लेख विचारोत्तेजक एवं चिंतन युक्त लगता है।

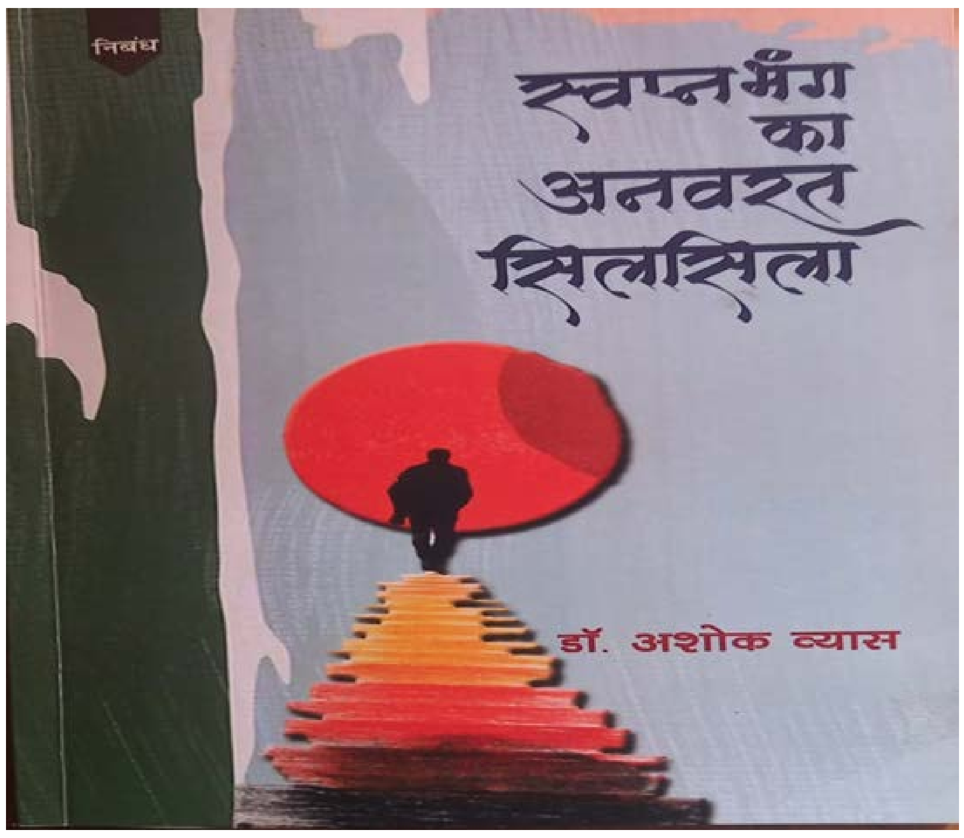

"भारतीय नारी का लिव इन रूप" में आपने भारतीय संस्कृति के विरुद्ध समाज में फैल रही इस कुरीति पर चिंता जताई है। हाल ही में सरकार द्वारा संसद में प्रस्तुत नारी वंदन अधिनियम संशोधन का समर्थन करता मालूम पड़ता है। "भारतीय साहित्य में सामाजिक समरसता" आलेख पढ़ने पर ऐसा आभास होता है कि लेखक ने धार्मिक ग्रंथो का अध्ययन किया है। इसी आलेख में आप लिखते हैं कि "भारतीय साहित्य मैं सामाजिक समरसता सरस्वती नदी की तरह है जो समय के थपेड़ों से लुप्त होकर भी अदृश्य रूप से सदैव उपस्थित रही है, जिसके द्वारा भारतीय समाज में साहित्य से समरसता की संस्कृति का निर्माण किया। "

" मतदान हाथ उठाने से बटन दबाने तक " भारत की मतदान प्रणाली पर एक शोधपरक लेख प्रतीत होता है। आप लिखते हैं कि "हमारे देश को विश्व का सबसे बड़ा जनतांत्रिक राष्ट्र इसलिए मानते हैं क्योंकि संविधान लागू होने के बाद से हमारे यहां एक व्यक्ति एक वोट के सिद्धांत के अनुसार मताधिकार प्राप्त नागरिकों की संख्या संसार में सबसे अधिक है।" इसकी पुष्टि लेखक की इन पंक्तियों से होती है कि "संविधान लागू होने के बाद भी पिछले लगभग 70 से अधिक वर्षों से भारतीय जनता ने मताधिकार का उपयोग करके अपने पवित्र कर्तव्य का समुचित रूप से पालन करके यह प्रमाणित कर दिया है कि उसे जनतंत्र में पूर्ण विश्वास है। " हाल ही में संपन्न पांच राज्यों के चुनावों में सर्वाधिक मतदान का रिकॉर्ड बना हैं। जिसमें मतदाताओं ने भयमुक्त होकर निष्पक्ष मतदान किया , यद्यपि जिन्हे पराजय मिली वे इसे अमान्य कर रहे है।

"मध्य प्रदेश का गौरव मालवा" लेख मुझे अधिक रुचिकर और दिल के करीब लगा, क्योंकि मैं भी मालव भूमि में भी जन्मा और पला -बढ़ा हूँ। लेखक मालवा के बारे में एक बात कहना भूल गए कि मालवा के बारे में कहा जाता है कि "मालव भूमि गहन गंभीर, डग - डग रोटी पग -पग नीर". मालवा के लोगों के बारे में ऐसा माना जाता है कि वह आलसी होते हैं और होम सिकनेस से ग्रस्त होते है साधारणतय व्यवसाय या नौकरी के लिए मालवा से बाहर जाना पसंद नहीं करते। इस बारे में आगर मालवा के एक साहित्यकार/ लेखक श्री रमाकांत चौधरी ने अपने एक में लेख में बताया था कि मालवा के लोग आलसी क्यों होते हैं ? उन्होंने बताया था कि मालवा की भूमि में अफीम की खेती बहुतायत से होती थी और अब उसी भूमि में गेहूं की पैदावार होती है। इस भूमि में अभी भी अफीम का नशा है और वही नशा इस जमीन में पैदा हुए गेहूं में आ जाता है।

"युवा देश और भ्रष्टाचार " आलेख में भ्रष्टाचार के मूल कारणों पर इशारा करते हुए लिखा है कि "भ्रष्टाचार जो पहले टेबल के नीचे था वह ऊपर आ गया है . क्योंकि आज के युवा के सामने आदर्श का अभाव है. आज किसी भी युवा को रोजगार उसकी योग्यता के बजाय भ्रष्टाचार के माध्यम से मिलता है। तब आदर्श लोक सेवक के बजाय एक क्रूर कर्मचारी बनना उसके लिए सहज और स्वाभाविक होता है। " हमने भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन कर नेताओं को सत्ता प्राप्त करते हुए देखा है और वही नेता सत्ता में आते ही कट्टर ईमानदार लोग भ्रष्टाचार में आकंठ डूब गए। इसी कट्टर ईमानदार नेता की पार्टी के राज्यसभा सदस्य राघव चड्ढा ने पार्टी छोड़ने के बाद अपना दर्द व्यक्त करते हुए कहा कि / जब तक यह आज्ञाकारी तब तक संस्कारी/ साथ छोड़ने पर ही बना दिया भ्रष्टाचारी/ जो लूट खसोट को कहते हैं कट्टर ईमानदारी, आप ही बताएं कैसे निभाएं यारी।/

" विश्व हिंदी सम्मेलन और भारत में हिंदी" में हिंदी की दशा और दुर्दशा पर चिंता व्यक्त की गई है। हिंदी के विस्तार और उसमें सुधार के लिए कुछ सुझाव भी दिए हैं। वैसे हिंदी पर इसी संग्रह में तीन आलेख है कई शब्दों एवं विषयों की पुनरावृति भी इन लेखों में हुई है। "सभ्यता और संस्कृति के पोषक हमारी सरिताएं " में लेखक ने विलुप्त होती नदियों पर चिंता व्यक्त की है।

"सुरक्षा निरंतर दुर्घटना छूमंतर" में "सावधानी ही वह लगन है , साधना है, अभ्यास है, जिसके परिणाम स्वरुप दुर्घटनाएं छूमंतर हो जाएगी " पंक्तियां पूरे लेख को सारगर्भित करती हैं। "अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और साहित्य" में मुरारी लाल गुप्ता जी की पुस्तक की समीक्षा की गई है।

"विचारधारा या परिवार" शीर्षक लेख में पारिवारिक पार्टियों के बारे में अपने विचार व्यक्त किए हैं। हम देखते हैं कि जनता भी अब समझ चुकी है और पारिवारिक पार्टियों को चुनाव में लगातार पराजय होती जा रही है। उत्तर प्रदेश, बिहार के बाद अब तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में परिवारवादी पार्टियों को जनता ने अपने मताधिकार से नकार दिया है। देश की सबसे बड़ी पारिवारिक पार्टी कांग्रेस अब कुछ राज्यों तक सिमट कर रह गई है। पारिवारिक पार्टियों का भविष्य में समाप्त होना तय हैं। जिसका उल्लेख लेखक ने अपने लेख के अंतिम पंक्तियों में किया है की "प्रजातांत्रिक पद्धति ही वह तरीका है इसमें सत्ता पाने की राह आसान और आगे तक ले जाने की होती है परिवार का नाम ज्यादा समय तक काम नहीं देगा।"

" हेश टेग बॉलीवुड बॉयकॉट" शीर्षक से लेख में लेखक ने बॉलीवुड की फिल्मों और ओटीटी सीरियल एवं टीवी सीरियलों के गिरते स्तर पर चिंता व्यक्त की है। दर्शक यदि चाहे तो सोशल मीडिया के माध्यम से किसी फिल्म को हिट या फ्लॉप कर सकते हैं। किसी फिल्म स्टार को गिरा या उठा जा सकते है। लेखक ने कुछ रचनात्मक सुझाव भी इस लेख के माध्यम से दिए हैं। पुस्तक की शीर्षक रचना "स्वप्न भंग का अनवरत सिलसिला" में आजादी के बाद देश के राजनीतिक नेतृत्व ने जनता को किस तरह के सपने दिखाए और वह भंग हुए हैं उस पर विस्तृत रूप से चर्चा की है, काफी शोध परक लेख है। इसी लेख में लेखक ने एक नए शब्द का प्रयोग किया है जो काफी रोचक लगा। अभी तक हम मनमोहन सिंह की सरकार को रिमोट से चलने वाली सरकार की उपमा ही सुनते आ रहे थे। आपने उसे एक नया नाम "सोनिया जी की सैंडल सरकार" नाम दिया। "सत्ता विरोधी आंदोलन में आदर्शवादी व्यक्तित्व का होना" लेख में इसी संग्रह के कुछ लेखों के विषयों और शब्दों की पुर्नावृत्ति सी लगती है। "सार्वजनिक क्षेत्र और खुली आर्थिक नीतियां " में लेखक ने अपनी मातृ संस्था बी एच ई एल के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की है , ऐसा लगता है। रचनाओं की भाषा क्लिष्ट न होकर सरल है जो एक साधारण पाठक को विषय को समझने के लिए उचित है। प्रूफ रीडिंग में कुछ त्रुटियां रह गई है , जिन्हे सुधारा जा सकता था। फोंट एवं मुख्य पृष्ठ का कलेवर आकर्षक है। लेखक बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। व्यंग्यकार , कवि , लेखक के साथ संगीत प्रेमी एवं अच्छे गायक भी है। विभिन्न मंचों एवं सोशल मिडिया पर पर अपनी मधुर आवाज में गीतों की प्रस्तुति देते रहते है। संगीत या गीतों पर कोई आलेख इस संग्रह में नहीं होना थोड़ा अचरज सा लगता है।

चौक बहु मंडल की सदस्य मिले

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

चौक बहु मंडल की सदस्य मिले,,, चेहरे पर मुस्कुराहट,,, भारतीय परिधान का समावेश,,, मिलकर बाटी खुशियां जैन समाज की परिवार की बहुओं द्वारा चेहरे पर मुस्कुराहट,, भारतीय परिधान के साथ मिलजुलकर हँसी खुशी के पल बाटे, सभी बहुएं केरवा डेम स्थित निजी स्थल पर एकत्रित हुई, अध्यक्ष नीलू जैन ने सोलह श्रृंगार की सामग्री भेट कर सभी का स्वागत किया पारिवारिक माहौल में एक दूसरे से अपनी बातें शेयर की,, गेम खेले,, पुराने फिल्मी तराने के साथ नृत्य किए,, अपनी अपनी कला का प्रदर्शन किया अपने साथ लेकर आए व्यंजन के साथ एक दूसरे को शेयर कर आनंद लिया,,, समाज के प्रवक्ता अंशुल जैन ने बताया बहु मंडल द्वारा निरंतर सामाजिक सरोकार सहयोग की भावना से कार्य किए जा रहे हे,,, संस्था की सदस्य सामाजिक समरसता के साथ शिक्षा, चिकित्सा पर्यावरण के क्षेत्र में भी काम कर रही हे,, आद्य इस अवसर पर

अध्यक्ष श्रीमती नीलू जैन
कोषाध्यक्ष श्रीमती कविता जैन
श्रीमती मंजू जैन
उपाध्यक्ष श्रीमती निकिता जैन
मंत्री श्रीमती आरती जैन
मंत्री श्रीमती ज्योति जैन
सांस्कृतिक मंत्री श्रीमती आवृत्ति जैन
सांस्कृतिक मंत्री श्रीमती प्रियंका जैन

भावना जैन सोना जैन ममता जैन डिंपल जैन पूजा जैन प्रीति जैन संगीता जैन रीना जैन रानी जैन ज्योति जैन मनीष जैन विनीता जैन पायल जैन माही जैन सिल्की जैन मेघा जैन प्रियंका जैन पायल जैन अलका जैन कओपल जैन भावना जैन निकिता जैन दीपिका जैन पूजा जैन नेहा जैन अनिका जैन नेहा जैन अपेक्षा जैन ऋतु जैन अंजना जैन जयति जैन आदि मौजूद थी,,

मप्र के 1.5 लाख शिक्षकों को TET पास करना अनिवार्य

सुप्रीम कोर्ट ने कहा- बच्चों के भविष्य से समझौता नहीं, पात्रता परीक्षा जरूरी, 1 साल का अतिरिक्त समय

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मध्यप्रदेश के डेढ़ लाख से ज्यादा शिक्षकों को शिक्षक पात्रता परीक्षा (TET) देनी ही पड़ेगी। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को रिव्यू पिटीशनों पर फैसला सुनाते हुए कहा कि बच्चों के बेहतर शैक्षणिक विकास और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों का TET पास करना जरूरी है। कोर्ट ने यह भी साफ किया कि यह फैसला सिर्फ मध्यप्रदेश तक सीमित नहीं है, बल्कि देशभर के इन-सर्विस शिक्षकों पर लागू होगा। जिन राज्यों में अब तक पुराने शिक्षकों को TET से छूट मिली हुई थी, वहां भी अब यह आदेश प्रभावी माना जाएगा।

हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने राहत देते हुए परीक्षा पास करने की समय-सीमा 2 साल से बढ़ाकर 3 साल कर दी है। अब शिक्षकों को 31 अगस्त 2028 तक TET पास करने का मौका मिलेगा। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि समीक्षा के अधीन आदेश में कोई त्रुटि नहीं है और याचिकाकर्ता राहत पाने के हकदार नहीं हैं। कोर्ट ने माना कि बड़ी संख्या में शिक्षकों की सेवा प्रभावित होने से शिक्षा व्यवस्था पर असर पड़ सकता है, लेकिन बच्चों का हित सर्वोपरि है। कोर्ट ने कहा कि कानून व्यवहारिक भी होना चाहिए। बच्चों की पढ़ाई की निरंतरता बनाए रखने के लिए सीमित राहत देते हुए TET पास करने की समय-सीमा 2 साल से बढ़ाकर 3 साल की जा रही है। सुप्रीम कोर्ट ने सभी राज्यों को निर्देश दिए हैं कि TET परीक्षा साल में कम से कम दो बार आयोजित की जाए। कोर्ट ने कहा कि शिक्षकों को पर्याप्त अवसर मिलना चाहिए। साथ ही स्पष्ट कर दिया कि अब आगे कोई अतिरिक्त समय नहीं दिया जाएगा। इसके साथ ही सभी रिव्यू पिटीशन खारिज कर दी गईं।

सुप्रीम कोर्ट ने अंजुमन इशात-ए-तालीम ट्रस्ट मामले में इन-सर्विस शिक्षकों के लिए TET अनिवार्य रखने का फैसला बरकरार रखा। इससे पहले 1 सितंबर 2025 के आदेश में कोर्ट ने दो साल के भीतर पात्रता परीक्षा पास करने को कहा था। अब इसमें एक साल की अतिरिक्त मोहलत दी गई है। कोर्ट ने अपने आदेश में यह भी कहा कि TET सिर्फ नौकरी की शर्त नहीं, बल्कि बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने की संवैधानिक आवश्यकता है। फैसले के बाद शिक्षक संगठनों ने नाराजगी जताई है। ट्राइबल वेलफेयर टीचर्स एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष डीके सिंगोर ने कहा कि संगठन आदेश की समीक्षा कर रहा है। उनका कहना है कि पुराने शिक्षकों पर TET की अनिवार्यता सेवा अधिकारों के साथ अन्याय है। अध्यापक शिक्षक संयुक्त मोर्चा ने भी फैसले का विरोध करते हुए कहा है कि वह इस मुद्दे पर संसद से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक लड़ाई जारी रखेगा। मोर्चा ने आरटीई एक्ट में संशोधन की मांग के साथ क्यूरेटिव याचिका दायर करने की बात भी कही है।

विशेष स्वच्छता एवं सेवा अभियान

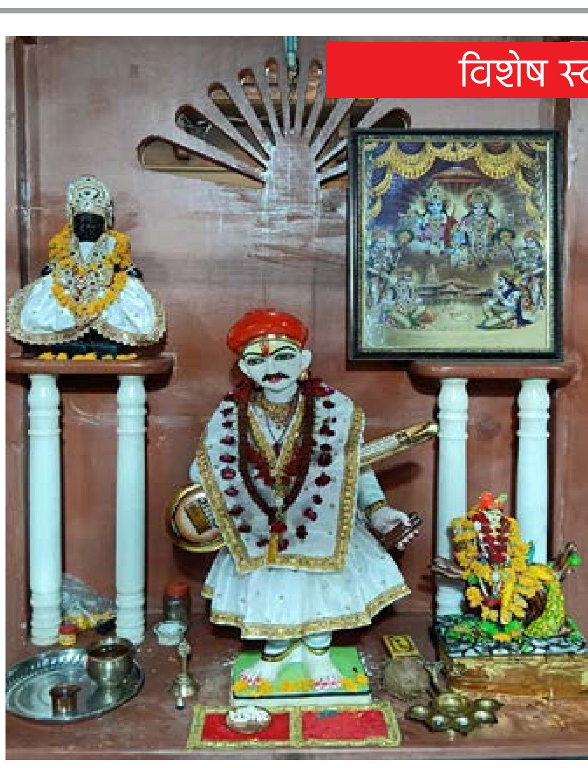

मंदिर चलो अभियान के अंतर्गत श्री संत नामदेव मंदिर परिसर में होगा

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

नामदेव समाज विकास परिषद, मध्य प्रदेश की नई पहल समाज सेवा, स्वच्छता एवं धार्मिक जागरूकता को मिलेगा बढ़ावा। नामदेव समाज विकास परिषद, मध्य प्रदेश के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों अध्यक्ष राजेंद्र कुमार नामदेव, कोषाध्यक्ष भीकम सिंह नामदेव एवं महामंत्री सुभाष चंद्र वर्मा द्वारा समाज हित एवं धार्मिक चेतना को सशक्त बनाने के उद्देश्य से विशेष "मंदिर चलो अभियान" प्रारंभ किया गया है।

इस अभियान के अंतर्गत समाज में सेवा, स्वच्छता, संगठन एवं आध्यात्मिक संस्कारों को प्रोत्साहित करने हेतु श्री संत नामदेव मंदिर सामुदायिक भवन परिसर, जवाहर चौक, भोपाल में विशेष साफ-सफाई एवं सेवा अभियान आयोजित किया जाएगा। कल 31 मई रविवार को प्रातः 7:30 बजे होगा आयोजन प्रारंभ होगा स्थान श्री संत नामदेव मंदिर सामुदायिक भवन जवाहर चौक 12 दफ्तर के पास मंदिर सेवा को बताया समाज जागरण का माध्यम

परिषद पदाधिकारियों ने बताया कि मंदिर केवल पूजा-अर्चना का स्थान नहीं, बल्कि समाज की संस्कृति, श्रद्धा, संस्कार एवं आध्यात्मिक एकता का केंद्र होता है। मंदिर की स्वच्छता एवं सेवा करना प्रत्येक समाजजन का नैतिक एवं धार्मिक दायित्व है।

यह अभियान समाज में सेवा भावना, अनुशासन, धार्मिक आस्था एवं सामाजिक सहभागिता को मजबूत करने का प्रेरणादायी प्रयास है।

समस्त समाज बंधुओं से सहभागिता की अपील : सभी समाज बंधुओं, मातृशक्ति एवं युवा साथियों से विनम्र आग्रह किया गया है कि वे अपनी स्वेच्छा, श्रद्धा एवं सेवा भाव के साथ उपस्थित होकर इस पुनीत अभियान में सहभागी बनें तथा समाज को संगठित एवं संस्कारित बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करें। सेवा ही संस्कार है, स्वच्छता ही श्रद्धा है।

क्या तय होगी जवाबदेही!

सीबीएसई परीक्षा को लेकर बने अविश्वास के लिए जिम्मेदार कौन है? सरकार ने सिस्टम लागू करने के पहले यह सुनिश्चित क्यों नहीं किया कि वह दोषमुक्त है? क्या इसकी जवाबदेही तय नहीं होनी चाहिए? ऑन-स्क्रीन मार्किंग सिस्टम की गड़बड़ियों ने केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) की 12वीं की परीक्षा के रिजल्ट को संदेह के दायरे में ला खड़ा किया है। अपनी उत्तर पुस्तिकाओं की दोबारा जांच कराने की अर्जी देने वाले कम-से-कम 12 छात्र इस सिस्टम में गंभीर गड़बड़ियों का इल्जाम लगा चुके हैं। एक छात्र ने तो यहां तक बताया है कि उसे भौतिक-शास्त्र की जो उत्तर पुस्तिका दिखाई गई, हैंडराइटिंग से साफ है कि वह उसकी नहीं थी। कई उत्तर पुस्तिकाओं की स्कैन्ड कॉपी साफ नहीं दिखी। खुद सीबीएसई के आंकड़ों के मुताबिक 68 हजार उत्तर पुस्तिकाओं की दोबारा स्कैनिंग करनी पड़ी। मजबूरी में लगभग 13,500 उत्तर पुस्तिकाओं की ऑफलाइन जांच करानी पड़ी। नए सिस्टम के तहत उत्तर पुस्तिकाओं की हार्ड कॉपी की जगह उनकी स्कैन्ड कॉपी की ऑन-स्क्रीन जांच का चलन शुरू किया गया है। सीबीएसई का वादा था कि इससे उत्तर पुस्तिकाओं की जांच तेजी और पारदर्शी तरीके से होगी। मगर शिक्षक संगठनों ने फरवरी में ही चेता दिया था कि बड़ी संख्या में ऐसे शिक्षक हैं, जिन्हें नए सिस्टम के उपयोग की अपेक्षित ट्रेनिंग नहीं दी गई है। फिर करोड़ों पन्नों की स्कैनिंग और उनकी ऑन-स्क्रीन जांच के सिस्टम का पर्याप्त परीक्षण भी नहीं हुआ है। लेकिन सीबीएसई अपनी जिद पर अड़ा रहा। जब रिजल्ट आया, तो पिछले साल की तुलना में उतीर्ण होने वाले छात्रों की संख्या में तीन प्रतिशत की गिरावट आई। नतीजतन, उत्तर पुस्तिकाओं की दोबारा जांच की अर्जियां दाखिल होने लगीं, जिससे गड़बड़ियों का खुलासा हुआ। अब शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने आईआईटी मद्रास और कानपुर के विशेषज्ञों से सिस्टम का परीक्षण कराने का एलान किया है। लेकिन मुद्दा यह है कि इस वर्ष मची अफरातफरी और परीक्षा व्यवस्था को लेकर बने अविश्वास के लिए जिम्मेदार कौन है? सरकार ने सिस्टम लागू करने के पहले यह सुनिश्चित क्यों नहीं किया कि वह दोषमुक्त है? नीट पेपर लीक प्रकरण में पहले से सवालों से घिरे प्रधान के लिए क्या यह उचित नहीं होगा कि इन गड़बड़ियों की जवाबदेही वे स्वीकार करें? ऐसा नहीं हुआ, तो शिक्षा व्यवस्था को लेकर गहरा रहे अविश्वास को दूर करना और कठिन हो जाएगा।

बढ़ती विषमता का आईना!

आय कर रिटर्न्स से उभरा रुझान साफ है। भारत में प्रत्यक्ष कर राजस्व अधिक से अधिक धनी वर्गों पर निर्भर होता जा रहा है। वैसे, विषमता बढ़ने की पुष्टि हवाई यात्रा संबंधी ताजा आंकड़ों से भी हुई है। वित्त वर्ष 2025-26 के लिए दाखिल हुए आयकर रिटर्न्स से देश में बढ़ रही आर्थिक गैर-बराबरी की झलक मिली है। एक अंग्रेजी वित्तीय अखबार के विश्लेषण के मुताबिक पांच लाख रुपये तक आमदनी वाले व्यक्तियों के रिटर्न की संख्या 2024-25 की तुलना में गिर कर लगभग आधी रह गई है। ऐसा संभवतः इसलिए हुआ कि गुजरे वित्त वर्ष में सरकार के आय कर दरों में बढ़ोतरी करने की वजह से बहुत से लोगों के लिए रिटर्न फाइल करने की अनिवार्यता नहीं रह गई। मगर इससे यह भी जाहिर होता है कि लोगों के क्रमिक रूप से ऊपर के आय वर्ग में शामिल होने का क्रम टूटा हुआ है। 2019-20 के बाद से 2022-25 तक पांच लाख से कम आबादी वाले वर्ग की ओर से सबसे ज्यादा रिटर्न फाइल होते थे। मगर अब पांच से दस लाख रुपये के बीच की आमदनी वाले समूह ने यह स्थान हासिल कर लिया है। 2024-25 में इस आय वर्ग में चार करोड़ 75 लाख रिटर्न फाइल हुए थे, जो पिछले वर्ष पांच करोड़ 45 लाख तक पहुंच गए। रुझान साफ है। भारत में प्रत्यक्ष कर राजस्व अधिक से अधिक धनी वर्गों पर निर्भर होता जा रहा है। वैसे, विषमता बढ़ने की पुष्टि हवाई यात्रा संबंधी ताजा आंकड़ों से भी हुई है। 2011-12 में हर दस लाख आबादी पर 649 परिवारों के 775 लोगों ने हवाई यात्रा की थी। तब कुल छह करोड़ 80 लाख हवाई यात्राएं हुईं। 2023-24 में हवाई यात्राओं की संख्या 15 करोड़ 37 लाख तक पहुंच गई। लेकिन ये यात्राएं हर दस लाख आबादी में 471 लोगों ने की, जो 469 परिवारों से आए। मतलब यह कि 2011 में हवाई यात्राओं की संख्या भले कम थी, मगर आबादी के हिसाब से यात्रियों का अनुपात कहीं बड़ा था। महंगी कारों एवं अन्य उपभोक्ता चीजों की खरीदारी के आंकड़ों से भी इसी रुझान का संकेत मिलता है। इसीलिए सरकार के विषमता घटने के दावों पर यकीन करना मुश्किल होता गया है। मसलन, पारिवारिक उपभोग खर्च सर्वे रिपोर्ट- 2023-24 में ऐसा दावा किया गया। जबकि आय एवं व्यय के अन्य आंकड़े कुछ और कहानी बताते हैं।

पढ़ाई और परीक्षा के बुरे दिन!

इन दिनों पढ़ाई औऱ परीक्षा के बुरे दिन चल रहे हैं। प्राथमिक विद्यालयों से लेकर उच्च शिक्षण संस्थानों तक शिक्षा की गुणवत्ता गिर गई है और बोर्ड परीक्षा से लेकर दाखिले व नौकरी के लिए होने वाली प्रतियोगिता परीक्षाओं पर संकट है। अगर पढ़ाई की बात करें तो कोविड महामारी के बाद हुए कई सर्वेक्षणों से पता चला कि बच्चों के सीखने की प्रक्रिया यानी लर्निंग प्रोसेस में गड़बड़ी हुई है। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा की स्थिति यह है कि छठी या सातवीं के बच्चे हिंदी की 10 पंक्तियों का शुद्ध पाठ नहीं कर पाते हैं। अपने दर्जे से कई क्लास नीचे के गणित के सवाल हल नहीं कर पाते हैं। दूसरी ओर उच्च शिक्षा का हाल यह है कि पांच साल तक एमबीबीएस की पढ़ाई करने के बाद डॉक्टर लोग एमडी की डिग्री के लिए नीट पीजी की परीक्षा देते हैं तो उनको माइनस 40 तक मार्क्स आ रहे हैं। दो सौ सवाल और आठ सौ अंकों की परीक्षा में इस साल काउंसिलिंग के लिए क्वालिफाइंग परसेंटाइल शून्य कर दिया गया था। चार अंक लाने वालों का तो मेडिकल कॉलेज में दाखिला हुआ, एमडी की पढ़ाई के लिए। समझ सकते हैं कि प्राथमिक कक्षाओं से लेकर मेडिकल की पढ़ाई तक की क्या स्थिति है। पढ़ाई के साथ साथ परीक्षा के भी बुरे दिन चल रहे हैं। इस साल हुई तीन परीक्षाओं में हुई ग़डबड़ी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि सरकार किस तरह से परीक्षा को तदर्थ ढंग से ले रही है और उसका कितना बड़ा नुकसान किशोर व युवा उम्र के छात्रों को भुगतना पड़ रहा है। सबसे ताजा मामला सीबीएसई की 12वीं की परीक्षा का है। इस बार सीबीएसई ने कॉपी जांचने के लिए ऑन स्क्रीन मार्किंग यानी ओएसएम पद्धति अपनाई। इसके तहत 17 लाख से ज्यादा छात्रों की कॉपियों के लाखों पन्ने स्कैन किए गए और उन्हें सिस्टम पर अपलोड किया गया और जांचने वालों ने स्क्रीन पर उन स्कैन की गई कॉपियों को देख कर मार्किंग की। इतना ही नहीं इस बार ऑन स्क्रीन मार्किंग के साथ साथ मार्किंग के तरीके में भी बदलाव किया गया। पता नहीं किस भावना के तहत यह तय किया गया कि इस बार कॉपी जांचने में सख्ती होगी और मामूली गड़बड़ी पर भी नंबर काटे जाएंगे। जैसे किसी छात्र ने आठ की बजाय छह स्टेप में गणित का सवाल हल कर दिया या सभी स्टेप सही हैं परंतु जवाब में गड़बड़ी है या जवाब सही है और स्टेप्स ठीक नहीं हैं तो उनको बहुत कम अंक मिलें हैं। पहले शिक्षक इसमें थोड़ा लचीला रुख रखते थे। इस बार ऐसा नहीं है। इसको अकादमिक फैसला मान कर स्वीकार किया जा सकता है। माना जा सकता है कि अब सीबीएसई बहुत शुद्धतावादी और कट्टर रुख रखेगा। परंतु इसके अलावा जो गड़बड़ियां हुई हैं वह व्यवस्थागत हैं। मिसाल के तौर पर लाखों पन्नों को स्कैन करके उन्हें अपलोड करते समय बहुत तरह की गड़बड़ी हुई। कई छात्रों की कॉपी का पहला पन्ना तो उनका था परंतु बाकी पन्ने दूसरे छात्र की कॉपी के थे। कई छात्रों की कॉपी के एक ही पन्ने कई बार अपलोड हो गए थे और कई पन्ने छूट गए थे। कई छात्रों की कॉपी के पन्ने ठीक तरह से स्कैन नहीं हुए और धुंधली कॉपी ही अपलोड कर दी गई। इन सारी गड़बड़ियों के बीच शिक्षकों ने पूरी सख्ती से कॉपी जांची। नतीजे आए तो बच्चों और अभिभावकों के हाथ पांव फूल गए हजारों बच्चे ऐसे थे, जिन्होंने इंजीनियरिंग में दाखिले के लिए जेईई मेन्स की परीक्षा में 85 या 90 या उससे ज्यादा पर्सेंटाइल हासिल किया है और जेईई एडवांस के लिए क्वालिफाई कर गए लेकिन 12वीं में 75 फीसदी अंक नहीं आए, जिसकी वजह से वे आईआईटी में दाखिला के लिए जेईई एडवांस की परीक्षा नहीं दे सकेंगे। उनकी दूसरी मुश्किल यह है कि केंद्रीय विश्वविद्यालयों के अच्छे कॉलेजों में दाखिला लेने के लिए सीयूईटी की परीक्षा होती है। उसमें पर्सेंटाइल टाई होने पर 12वीं के अंक के आधार पर दाखिले में प्राथमिकता मिलती है। तभी 12वीं बोर्ड की परीक्षा देने वाले छात्रों में से 25 फीसदी यानी चार लाख से ज्यादा छात्रों ने पुनर्मूल्यांकन के लिए आवेदन किया। परंतु वह काम उनके लिए दुःस्वप्न की तरह था। कई दिन तक पुनर्मूल्यांकन के आवेदन के लिए बनी वेबसाइट क्रैश होती रही। पहले तो छात्रों को उसका लिंक नहीं मिला। उन्हें सीबीएसई के ट्विट से लिंक खोलना पड़ रहा था। उसके बाद रजिस्ट्रेशन कराने और फीस जमा कराने के बीच साइट क्रैश हो रही थी। ऑनलाइन आवेदन के समय कई छात्रों से बहुत ज्यादा फीस मांगी गई, जिसे लेकर बोर्ड ने कहा कि उनकी साइट हैक कर ली गई थी। अब बच्चों के पैसे लौटाने की प्रक्रिया चल रही है।

आग का दरिया पार करने जैसा काम करके बच्चों ने आवेदन कर दिया और जब कॉपी हाथ में आई तो पता चला कि उनके नाम के साथ दूसरे की कॉपी अपलोड कर दी गई है या खराब ढंग से स्कैन की गई कॉपी अपलोड की गई है या सही जवाब को भी गलत बता कर नंबर काट दिए गए हैं। सोचें, यह सारी तकलीफें जिन बच्चों से झेली है वे 17 या 18 साल के किशोर हैं। उनके कोमल मन पर हुए असर का सिर्फ अनुमान किया जा सकता है। हैरानी की बात है कि ओएसएम की पूरी प्रक्रिया बिना पायलट प्रोजेक्ट के शुरू की गई। शिक्षकों को कहा गया कि वे काम करते हुए सीखें यानी इस बैच के बच्चों को प्रयोग के लिए गिनी पिग बना दिया गया।

इससे पहले मेडिकल में दाखिले के लिए नीट की परीक्षा हुई। तीन मई को परीक्षा हुई और अगले दिन पता चल गया कि पेपर लीक हो गया था। कई दिन की जांच के बाद नेशनल टेस्टिंग एजेंसी यानी एनटीए ने परीक्षा रद्द कर दी। इसके बावजूद जब एनटीए के चेयरमैन और डीजी की पेशी संसदीय समिति के सामने हुई तो उन्होंने कहा कि उनके सिस्टम से पेपर लीक नहीं हुआ। सोचें, प्रश्न पत्र तैयार करने वाले लोग पेपर लीक में शामिल थे और सीबीआई ने उनको गिरफ्तार किया है। पर एनटीए के अधिकारी कह रहे हैं कि उनके सिस्टम से पेपर लीक नहीं हुआ। क्या प्रश्न पत्र तैयार करने वाले लोग एनटीए के सिस्टम के नहीं थे? असल में नीट यूजी परीक्षा की पूरी व्यवस्था ही तदर्थ है और ठेके पर चल रही है। अब 21 जून को फिर लाखों छात्र नए सिरे से परीक्षा देंगे। ये करीब 23 लाख छात्र भी किशोर व युवा उम्र के हैं और उनके मन पर क्या बीत रही होगी इसका भी अंदाजा लगाया जा सकता है।

तीसरी परीक्षा यूपीएससी की सबसे प्रतिष्ठित परीक्षा है। रविवार, 24 मई को इसकी प्रारंभिक परीक्षा हुई। इसमें ऐसे सवाल पूछे गए हैं, जिससे सब हैरान हैं। कई सवाल तो ऐसे हैं, जिनको देख कर लग रहा है कि रट्टा मार कर पढ़ाई करने वालों को चुनने के लिए ये सवाल तैयार किए गए हैं। कई सवाल तो पूरे के पूरे पन्ने के हैं और उनके विकल्पों को देख कर लग रहा है कि किसी ने इतना लंबा सवाल लिख कर विकल्प तैयार करने में दिमाग नहीं लगाया। कहा जा रहा है कि कोचिंग सेंटर वाले जैसी पढ़ाई कराते हैं उससे अलग सवाल पूछा गया ताकि बच्चों का कोचिंग से मोहभंग हो। क्या इससे भी मूर्खतापूर्ण कोई तर्क हो सकता है? क्या यूपीएससी को पता नहीं है कि जैसा सवाल पूछा जाएगा, कोचिंग वाले वैसी पढ़ाई कराने लगेंगे? क्या उसे यह पता नहीं है कि आईएएस, आईपीएस बनने के लिए छात्र कोचिंग करेंगे ही, चाहे कुछ भी हो जाए?

बहरहाल, पढ़ाई और परीक्षाओं को लेकर जिस तरह की घटनाएं हो रही हैं वह सरकार के तदर्थ रवैए को दिखाती हैं। ऐसा लग रहा है कि सरकार को इनकी परवाह नहीं है। ऐसी मानसिकता दिख रही है कि शिक्षा की गुणवत्ता गिरती है तो गिर जाए और परीक्षा में गड़बड़ियां होती हैं तो हो जाए। न तो स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय और न परीक्षा कराने वाली एजेंसियां संरचनागत कमियों को समझ रही हैं और न उन्हें दूर करने की कोशिश कर रही हैं।

ऐसा लग रहा है कि किशोरों और युवाओं को पढ़ाई और परीक्षा से विरक्त करने का प्रयास चल रहा है। शिक्षकों की नियुक्ति में योग्यता और प्रशिक्षण की बजाय निष्ठा देखी जा रही है। एक खास विचारधारा और किसी खास भाई साहेब के करीबी होने के आधार पर नियुक्तियां हो रही हैं। शिक्षा मंत्री की नियुक्ति भी इस आधार पर है कि वे बहुत कर्मठ राजनीतिक कार्यकर्ता हैं और चुनाव प्रबंधन में उनका जवाब नहीं है। उनको जहां भेजा जाता है वहां पार्टी चुनाव जीतती है। कायदे से शिक्षा जैसा मंत्रालय किसी ऐसे व्यक्ति को मिलना चाहिए, जो शिक्षा के बारे में जानता हो, नई प्रवृत्तियों से परिचित हो और जिसकी प्रतिबद्धता देश का भविष्य गढ़ने के लिए हो।

-अजीत द्विवेदी

करार के अंदर करार!

क्रिटिकल मिनरल्स के बारे में हुए समझौतों की सफलता ऐसे वित्त की व्यवस्था पर निर्भर है, जो शीघ्र मुनाफे के लिए बेचैन ना हो। साथ ही प्रतिभा एवं कौशल जुटाए जा सके, तो बेशक चीन पर निर्भरता से मुक्ति मिल सकेगी।

क्वॉड के विदेश मंत्रियों की बैठक का लगभग पूरा ध्यान आधुनिक उद्योगों के लिए महत्त्वपूर्ण खनिजों की आपूर्ति श्रृंखला तैयार करने पर केंद्रित रहा। भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के विदेश मंत्रियों ने क्रिटिकल मिनरल्स की सुरक्षित आपूर्ति श्रृंखला बनाने के लिए सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों से 20 बिलियन डॉलर जुटाने का इरादा जताया। इसके अतिरिक्त भारत और अमेरिका के विदेश मंत्रियों ने इसी मकसद से एक अलग करार के फ्रेमवर्क पर दस्तखत किए। इसके तहत क्रिटिकल मिनरल्स के खनन, प्रोसेसिंग, और रिसाइक्लिंग की आपूर्ति श्रृंखलाएं बनाने के लिए दोनों देश सहयोग करेंगे।

छह महीने पहले 'आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस युग के लिए सुरक्षित एवं विश्वसनीय आपूर्ति श्रृंखला' बनाने के लिए अमेरिका के नेतृत्व में पैक्स सिलिका नाम की पहल शुरू की गई थी। इसका मकसद भी क्रिटिकल मिनरल्स और सेमीकंडक्टर क्षेत्र में सहयोग कायम करना था। इन बातों से साफ है कि खासकर अमेरिका की निगाह में रेयर अर्थ सहित तमाम महत्त्वपूर्ण खनिज आज कितने अहम हैं। खास बात यह है कि इन खनिजों की दुनिया में कोई कमी नहीं है। लेकिन इनकी प्रोसेसिंग और उनसे उपयोग योग्य उत्पाद बनाने की लगभग 90 फीसदी क्षमता सिर्फ चीन के पास है। नतीजतन, चीन तमाम देशों की सामरिक एवं रणनीतिक मंशाओं पर लगाम लगाने में सक्षम बना हुआ है। अतः अमेरिका ने अब अपने नेतृत्व में वैकल्पिक आपूर्ति श्रृंखला तैयार करने में अपनी पूरी ताकत झोंक दी है।

मगर इन खनिजों से उपयोग लायक उत्पाद बनाना जटिल, महंगी और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली प्रक्रिया है। इसकी क्षमता हासिल करने में भी वक्त लगेगा। अमेरिका की वित्तीयकृत अर्थव्यवस्था में ऐसी परियोजनाएं लगाना कठिन हो गया है, जिनके बारे में समझा जाता हो कि उनमें "हाथ गंदे" होते हैं। इसलिए वह करार-दर करार कर रहा है। बहरहाल, ऐसे प्रोजेक्ट्स में मुनाफा होने के पहले लंबा इंतजार भी करना होता है। इसलिए ऐसे तमाम समझौतों की सफलता ऐसे वित्त की व्यवस्था पर निर्भर है, जो शीघ्र मुनाफे के लिए उतावला ना हो। साथ ही प्रतिभा एवं कौशल को तराशने की चुनौती है। ये सब जुटाए जा सके, तो निसंदेह दुनिया चीन पर निर्भरता से मुक्त हो सकेगी।

मैं दिल्ली, हर चीज़ से पहले यहाँ थी!

मुझे हमेशा मेरे लोगों ने बनाया। वे लोग जो बाहर से आए, जिन्होंने मुझे अपनाया और ऐसा करके मुझे बनाया। मैं हमेशा दिल वालों की दिल्ली रही हूँ। जन्म से नहीं, चुनाव से। ठहरने से। किसी कठिन चीज़ से प्रेम करने और उसे घर कहने से।पर अब मुझे इतनी गहराई तक खोद दिया गया है कि मैं अपने भीतर का रिसाव सुन सकती हूँ। वे पेड़ गिरते सुनती हूँ जो दशकों से मेरे साथ खड़े थे। मेरी नसों पर मेट्रो के फैल जाने से पहले। उन फ्लाईओवरों के एक दूसरे पर चढ़ते जाने से पहले, जब आसमान तक इंजीनियर किया हुआ लगने लगा था। उन मॉलों के आने से पहले, जिनमें इत्र और ठंडी हवा की गंध भरी रहती है, और जहाँ कभी पुराने सिनेमा हुआ करते थे। फीके पड़ते पोस्टर, चिपचिपी फ़र्श और देर रात तक चलती फ़िल्में। उन कैफ़े के आने से पहले, जिनके अंग्रेज़ी नाम हैं और जिन्होंने उन रेस्तराँ की जगह ले ली जहाँ वेटर पिता तक को पहचानते थे। उस समय से पहले, जब यह शहर खुद से ही अधीर होने लगा था। उस सबसे पहले, मैं यहाँ थी। ब्रिटिशों के मेरे सीने पर अपनी सीधी, औपचारिक सड़कें खींचकर उसे नई दिल्ली कहने से पहले, मानो शहर की कल्पना सबसे पहले उन्हीं ने की हो। मुगलों के मुझे एक साथ भव्य और उदास बना देने से पहले। तुगलकों के मुझे बार बार बसाने और छोड़ने से पहले, उस बेचैनी के साथ जिसमें उन्हें खुद भी यक़ीन नहीं था कि मैं रहने लायक हूँ या नहीं। मैंने उन सबको आते देखा है। जाते भी। साम्राज्य हमेशा खुद को स्थायी मानकर आते हैं। शहर उनसे ज़्यादा जानते हैं। 1947 में मैं एक तूफ़ान से गुज़री थी। विभाजन मेरे भीतर घाव की तरह उतरा था। लाखों शरणार्थी आए। शहर की पहचान लगभग एक रात में बदल गई। फिर भी अजीब बात है, वे मेरे सबसे मुलायम साल थे। देश नया भी था, थका हुआ भी, और उम्मीद से भरा भी। मैं भी वैसी ही थी। चाँदनी चौक में तब भी ताँगे चलते थे। लोग राजपथ पर साइकिल चलाते थे। जनपथ का कॉफ़ी हाउस तब तक खुला रहता था, जब तक कवियों और पत्रकारों के पास सिगरेट और बहस, दोनों खत्म नहीं हो जाते थे। हवा तब बस हवा थी। पानी बिना घबराहट के आता था। हर मौसम थकाता था, लेकिन सज़ा जैसा नहीं लगता था। शामें धीमी उतरती थीं। पेड़ों की छाया लंबी होती थी और सरकारी दफ्तरों से लौटते लोग बिना जल्दी के बस स्टॉपों पर खड़े दिखाई देते थे। पुरानी दिल्ली की गलियों में रात देर तक बर्तनों की आवाज़ें आती रहती थीं। नई दिल्ली अब भी अपने चौड़े रास्तों में आधी खाली लगती थी। शहर तब इतना तेज़ नहीं भागता

था। उसे अभी खुद को साबित करने की उतनी बेचैनी नहीं हुई थी। मुझे वह भी याद है। सर्दियों की धूप में गोल मार्केट के लॉन पर दौड़ते छोटे कदम। बाबा खड़क सिंह मार्ग पर स्कूल बस पकड़ने के लिए भागती हुई वह लड़की। अपने पिता का इंतज़ार करती हुई, जो उसे तालकटोरा में तैरने ले जाते थे। हरियाली से भरा मेरा पुराना मुग़ल कटोरा, रिज की धरती में आसमान की ओर खुला हुआ। उसका स्कूल अदालत, स्टेडियम और प्रगति मैदान के पास था। वहीं हर साल पुस्तक मेला लगता था और राज रेवाल की कंक्रीट जाली पूरे परिसर के ऊपर उठती दिखाई देती थी। ज्यामिति, महत्वाकांक्षा और खुद पर भरोसा करती एक पूरी पीढ़ी का आकार। उसे तब यह नहीं पता था कि वह क्या महसूस कर रही है। वह बस ऊपर देखा करती थी। वह बड़ी हुई और मैं उसके साथ बदलती गई। हर रविवार शाम अपने भाई के साथ रेल भवन के बाहर खड़े पुराने भाप इंजन को चलाने का नाटक करती हुई। 1925 का वह दार्जिलिंग इंजन, छोटा, गरिमामय, जिसे दशकों तक वहीं रखा गया, जब तक किसी ने यह तय नहीं कर लिया कि उसकी जगह वंदे भारत की प्रतिकृति ज़्यादा उपयुक्त लगेगी। संसद सत्रों के दौरान गाड़ी का संसद मार्ग की ओर मुड़ना, और पीछे बैठी वह लड़की उस गोल, ठहरी हुई इमारत को देखती रहती, जो सड़क के इतना करीब लगती थी मानो हाथ बढ़ाकर छू सकती हो। तब भी लोगों पर विश्वास करती हुई, जिनके लिए वह बनाई गई थी। सर्दियों की धुंध। फ़ुटपाथों पर जामुन के दाग। खुली खिड़कियों से भीतर आती बरसाती हवा। मई में पूरी सड़कों को लाल कर देने वाले गुलमोहर। ऊपर से झरते अमलतास। वह दिल्ली, जिसने खुद को लगातार साबित करना अभी शुरू नहीं किया था। वह बड़ी होती गई और मुझे अपने भीतर कहीं जमा करती गई। लेकिन आज मैं वैसी नहीं रही, जैसी मैंने खुद को उसे दिखाया था। इस साल की गर्मी चार महीने तक बिना किसी माफ़ी के मेरे सीने पर बैठी रही। मेरे पेड़, जो हाल की कटाइयों से बच पाए, पूरी गर्मी चुप खड़े रहे। उन्होंने सुंदर दिखने की कोशिश तक छोड़ दी थी। वे बस जीवित रहने की कोशिश कर रहे थे। चाणक्यपुरी से होकर गुज़रो, तब समझोगे कि मैं कैसी थी। चौड़ी हरी सड़कें। ऊपर झुकते विशाल पेड़, जैसे कोई भरोसा सिर पर फैला हो। दिल्ली को ऐसे बनाया गया था कि वह साँस ले सके। ऐसी जगहों के साथ, जो अपनी अहमियत जानती थीं।अब मैं राष्ट्रपति भवन के पीछे नई इमारतों को उठते देखती हूँ। ऊँची, रंगहीन और खुद पर बेहद यक़ीन से भरी हुई। लेकिन वे भरोसा नहीं बढ़ातीं। वे केवल उसे बीच में तोड़ देती हैं। मध्य दिल्ली, जिसे बाकी दुनिया लुटियंस दिल्ली कहती है, में कभी एक गरिमा थी। विरासत में मिली हुई, जटिल, राजनीति से खाली नहीं, फिर भी गरिमा। ऐसी गरिमा जो दशकों में बनती है, जिसे समारोह निभाने के लिए शोर की ज़रूरत नहीं पड़ती। राजस्थान से पत्थर काटकर उन्हें जमा देने भर से आत्मविश्वास नहीं आता। सड़कों के नाम बदल देने, इमारतों को नए नाम दे देने, कर्तव्य पथ और सेवा सदन कह देने भर से किसी शहर का स्वभाव नहीं बनता। स्वभाव धीरे धीरे बनता है। उसमें पीढ़ियाँ लगती हैं। जो आज बनाया जा रहा है, उसे माफ़ करने में भी शायद पीढ़ियाँ लगेंगी। अब वह गर्म पत्थरों और डामर की लंबी पट्टी में बदल चुका है। छोटी छोटी रोशन पोखरें, जिनकी चमक मुझ पर जँचती नहीं। पीली बैरिकेडें उन सड़कों के किनारे खड़ी हैं जो कभी खुली थीं, उदार थीं, लोगों के लिए बनी थीं। बगीचों को स्मारकों में बदल दिया गया। जगह जगह मूर्तियाँ और आकृतियाँ लगा दी गईं, मानो चीज़ों से भर देने भर से किसी शहर को अर्थ मिल जाता हो। इससे मैं केवल ऐसी दिखती हूँ जैसे कोई खुद को भूल चुका हो और बहुत कोशिश कर रहा हो कि याद कर सके। उस सड़क पर उठती गर्मी अब केवल मरीचिका नहीं रही। वह मैं हूँ, जलती हुई। लेकिन यह कहानी सिर्फ इमारतों या बदलते नामों की नहीं है। मैं हमेशा ऐसे बदलावों से बचती रही हूँ। जिस चीज़ से मैं शायद न बच पाऊँ, वह यह है। कहा जा रहा है कि ये बदलाव मुझे उपनिवेशवादी इतिहास से मुक्त करने के लिए किए जा रहे हैं। लेकिन उसी इतिहास ने मुझे बनाया भी था। परतों वाली, सहनशील, मेरी अपनी। और जैसे जैसे उसे हटाया जा रहा है, मैं खुद को भीतर से बिखरता महसूस करती हूँ। मुझे इतनी गहराई तक खोदा गया है कि मैं अपने भीतर का रिसाव सुन सकती हूँ। वे पेड़ गिरते सुनती हूँ जो दशकों से मेरे साथ खड़े थे। अपनी नदियों को घुटते देखती हूँ। धूल को उठते महसूस करती हूँ। मौसमों की धूल नहीं, बल्कि तोड़े जाने की वह धूसर धूल, जिसे निर्माण का नाम दिया गया है। वह मेरी आँखों में भर जाती है, फेफड़ों में उतरती है, हर चीज़ पर बैठ जाती है। मैं कभी भरपूर थी। मैं चाहती हूँ कि जो लोग मुझे अब जानते हैं, थकी हुई, धूल से भरी, किनारों से टूटती हुई, वे जानें कि मैं कभी फूलों, छाँव और इतने चौड़े फ़ुटपाथों की शहर थी कि उन पर सचमुच चला जा सके। ऐसी सर्दियों की शहर, जो हर चीज़ को माफ़ कर देती थीं। ऐसी बारिशों की, जो हर चीज़ को नया बना देती थीं। और उन लोगों की, जिनमें एक अजीब सी जीवंतता थी। लगभग लापरवाह। खुद पर यक़ीन करती हुई। जगह घेरने से न डरने वाली। ज़ोर से हँसने वाली। देर तक बाहर रहने वाली। भीतर कहीं यह महसूस करती हुई कि शहर उनके साथ खड़ा है। मुझे हमेशा मेरे लोगों ने बनाया। वे लोग जो बाहर से आए, जिन्होंने मुझे अपनाया और ऐसा करके मुझे बनाया। मैं हमेशा दिल वालों की दिल्ली रही हूँ। जन्म से नहीं, चुनाव से। ठहरने से। किसी कठिन चीज़ से प्रेम करने और उसे घर कहने से। कुछ हफ्ते पहले एक पत्रकार मेरी सड़कों पर घूम रही थी। वह लोगों से सिर्फ एक सवाल पूछ रही थी। क्या तुम भी थक गए हो? मुझे उसके जवाबों का इंतज़ार नहीं करना पड़ा। मैं यह हर जगह सुनती हूँ। हवाई अड्डों की बातचीत में। माता पिता की उस सलाह में, जिसमें वे बच्चों से कहीं और बस जाने को कहते हैं। पुरानी दिल्ली के उन परिवारों में, जो आखिरकार वे घर बेच रहे हैं जिनके भीतर कभी मरने तक रहने का यक़ीन था। युवाओं की आवाज़ में, जो मेरे बारे में वैसे बात करते हैं जैसे किसी ऐसे रिश्ते के बारे में की जाती है जिसे बहुत लंबे समय तक प्रेम किया गया हो और अब निभाना मुश्किल हो गया हो। मैं उसे भी सुनती हूँ। हर गर्मियों की सुबह खिड़की से सिर बाहर निकालकर पूछते हुए, पानी आया क्या। दिसंबर की ठंडी सुबह अपने ड्रॉइंग रूम में एयर प्यूरीफ़ायर का फ़िल्टर बदलते हुए, जबकि साफ़ हवा वाले शहरों में रहने वाले उसके दोस्त बाहर खुली हवा में साँस लेते हुए तस्वीरें भेजते हैं।

-श्रुति व्यास

तुर्की के दुश्मन के घर में शेर की तरह दहाड़ने लगे भारत के खूंखार हथियार, हिले कई देश

एजेंसी अंकारा

28 मई 2026 येरेवान की पहाड़ियों से टकरा कर जब भारतीय हथियारों की गूंज निकली तो यह केवल एक सैन्य प्रदर्शन नहीं था। यह एक नए विश्व व्यवस्था यानी कि न्यू वर्ल्ड ऑर्डर का उदय था। दुनिया ने देखा कि कैसे एक देश जो साल 2020 के युद्ध में अपने अस्तित्व की अंतिम सांसे गिन रहा था आज भारत के अजय अस्त्रों के दम पर शेर की तरह दहाड़ रहा है। दरअसल आर्मेनिया के लिए सबसे बड़ा खतरा था आसमान से बरसती मौत यानी तुर्की के टीबी2 ड्रोंस और टीबी2 ड्रोंस ने साल 2020 में अर्मेनिया में तबाही मचाई थी। लेकिन भारत ने उन्हें दिया आकाश वन1। यह सिस्टम सिर्फ एक मिसाइल नहीं यह सुपर कंप्यूटर ऑन व्हील्स है। यह एक साथ 10 लक्ष्यों को ट्रैक कर सकता है और 30 कि.मी. की रेंज में आने वाले किसी भी दुश्मन को राख बना सकता है। जब परेड में यह मिसाइलें गुजरी तो अज़रबजान के पायलटो के बीच खौफ का मैसेज चला गया। अब अर्मेनिया का आसमान नो फ्लाइंग ज़ोन बन चुका है। परेड की सबसे बड़ी दहशत का नाम था पिनाका मल्टी बैरल रॉकेट लॉन्चर यानी कि एमबीआरएल। यह वो हथियार है जिसने कारगिल की चोटियों पर पाकिस्तानियों के परखच्चे उड़ा दिए थे। अर्मेनिया को दिया गया गाइडेड पिनाका 75 से 90 कि.मी. तक मार कर सकता है, वार कर सकता है। इसकी एक ही बैटरी महज 44 सेकंड में 12 रॉकेट दाग कर पूरे के पूरे दुश्मन सैन्य एयर बेस को या यूं कह लें बेस को नक्शे से मिटा सकती है।

अजरबैजान की लंबी दूरी की आर्टिलरी का अब भारत ने ऐसा जवाब दिया जिसका कोई तोड़ है ही नहीं। अर्मेनिया का भूगोल पहाड़ों से भरा है। वहां भारी रूसी टैंक अक्सर रणनीतिक भूल साबित होते हैं। भारत ने उन्हें दिया एम एआरजी 155 बीआर। यह दुनिया की पहली ऐसी 155 एमएम की तोप है जो 4 * 4 ट्रक पर तैनात होता है। इसे सूट एंड स्कूट तकनीक के लिए बनाया गया है। यानी गोला दागो और दुश्मन की जवाबी कारवाई से पहले ही गायब हो जाओ। साथ ही 80 एजीएस तोपे जिनकी रेंज 48 कि.मी. तक है। अब अर्मेनिया की रक्षा पंक्ति की यह रीड बन चुकी है। हथियार तब तक बेकार है जब तक आपके पास उसकी सटीक जानकारी ना हो। भारत का स्वाति वेपन लोकेटिंग रडार दुश्मन की तोप के गोले के हवा में होते ही उसकी जन्म कुंडली निकाल लेता है। यह महज 2 से 3 सेकंड में बता देता है कि गोला कहां से दागा गया है ताकि भारतीय तोपे तुरंत जवाबी हमला कर सके। अर्मेनिया के लिए यह रडार एक गेम चेंजर साबित हुआ है जिसने उसकी रक्षा को अभेद्य बना दिया है। तुर्की और पाकिस्तान ने मिलकर एक एक्सिस बनाने की कोशिश की थी जिसका मुख्य एजेंडा था भारत को घेरना और कॉकिशस में अपना दबदबा बनाना। लेकिन भारत ने अर्मेनिया के जरिए उनके सामने ही अपनी मौजूदगी दर्ज करा दी। अब जब पाकिस्तानी जनरल तुर्की के ड्रोनों की तारीफ करते थकते नहीं है, तो उन्हें अर्मेनिया में तैनात भारतीय तकनीक की याद जरूर आती होगी। अब यह भारत की स्मार्ट पावर है। दुश्मन को उसके घर में ही ढेर कर लेना। देखा जाए तो आज से 12 साल पहले भारत दुनिया का सबसे बड़ा हथियार खरीददाता था। हम अपनी सुरक्षा के लिए दूसरों के सामने हाथ फैलाते थे। लेकिन साल 2014 के बाद नीतियां बदली। साल 2013 से 14 निर्यात मात्र 686 करोड़ था। साल 2025-26 में निर्यात 38,424 करोड़ यानी कि 4.1 बिलियन डॉलर है। यह 34 गुना की बढ़ोतरी कोई इत्तेफाक नहीं है। यह मेक इन इंडिया की उस जिद का नतीजा है जिसने भारत को आज 100 से ज्यादा देशों का रक्षा साझेदार बना दिया है। यानी भारत के हथियार 100 देशों में पहुंच चुके हैं। अब इन हथियारों के पीछे डीआरडीओ के उन हजारों वैज्ञानिकों की मेहनत है जिन्होंने दशकों तक प्रतिबंधों और सीमित संसाधनों के बावजूद हार नहीं मानी। एपीजे अब्दुल कलाम साहब का वह सपना आज सच हो रहा है जहां भारत अपनी रक्षा के लिए आत्मनिर्भर है। आज जब अर्मेनिया का सैनिक भारतीय गन चलाता है तो वह हमारे वैज्ञानिकों के गौरव को पूरी दुनिया में फैलाता है। अर्मेनिया तो सिर्फ एक मोर्चा है। दक्षिण चीन सागर में भारत की ब्रह्मोस सुपरसोनिक मिसाइल ने चीन के ड्रैगन की नींद उड़ा दी है। फिलीपींस को दी गई इस मिसाइल ने साबित कर दिखाया है कि भारत अब छोटे देशों का सबसे बड़ा और विश्वसनीय सुरक्षा कवच बन चुका है। इतना ही नहीं वियतनाम और इंडोनेशिया भी अब भारत की ओर उम्मीद से देख रहे हैं और खबरें दोस्तों यह आ रही है कि अर्मेनिया अब भारत से प्रलय बैलास्टिक मिसाइल और ब्रह्मोस लेने पर विचार कर रहा है। और अगर दोस्तों ऐसा हो गया तो यह पूरा क्षेत्र भारत की शक्ति के प्रभाव में आ जाएगा। अजरान और उसके समर्थकों के लिए यह एक चेकमेड जैसा होगा जिसका उसके पास कोई तोड़ नहीं होगा। अब सवाल है कि दुनिया भारत की ओर क्यों भाग रही है? क्योंकि भारतीय हथियार पश्चिमी हथियारों के मुकाबले काफी सस्ते हैं। लेकिन उनकी मारक क्षमता रूसी हथियारों से भी घातक है और इसका प्रमाण है अर्मेनिया के यह हथियार। भारत रगड तकनीक देता है जो रेगिस्तान की गर्मी और पहाड़ों की ठंड दोनों में काम करती है और यही भारतीय जादू है जो रक्षा बाजार में हलचल मचाए जा रहा है।

युद्धपोत देख भड़का चीन, लड़ाकू जहाज से नेवी को घेरा

एजेंसी बीजिंग

चीन और उसके झगड़े कभी खत्म नहीं होंगे और यही वजह है कि दक्षिण चीन सागर में लगातार तनाव का नया मोर्चा खुलता चला जा रहा है। चीन और पश्चिमी देशों के बीच समुद्री अधिकारों को लेकर लंबे समय से विवाद है और इस बीच चीन ने आरोप लगाया है कि नीदरलैंड की डच नेवी का युद्धपोत डी रुएटर उसकी समुद्री सीमा में घुस गया और वहां हेलीकॉप्टर ऑपरेशन भी किया। इसके बाद चीनी सेना ने उसे रोकने और वहां से हटाने के लिए कारवाई की। इस बीच हंगामा काफी ज्यादा बढ़ गया। दावा किया जा रहा है कि डच नेवी का युद्धपोत, डच नेवी का हेलीकॉप्टर दक्षिण चीन सागर में ऑपरेशन कर रहा है और इससे चीन को आपत्ति है। चीन की पीपल लिबरेशन आर्मी ने आरोप लगाया है कि नीदरलैंड की नौसेना का यह युद्धपोत डी रूटर चीन के शीशाद्वीप समूह के पास उसकी समुद्री सीमा में अवैध रूप से घुसा। इस घटना के बाद चीन ने कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए डच जहाज को चेतावनी दी और उसे वहां से हटाने के लिए सैन्य कारवाई की। चीनी सेना के दक्षिणी थिएटर कमांड के प्रवक्ता झाई शीचेंग ने कहा है कि डच युद्धपोत ने ना केवल चीन के दावे वाले समुद्री क्षेत्र में प्रवेश किया बल्कि वहां हेलीकॉप्टर उड़ाकर चीन के हवाई क्षेत्र का भी उल्लंघन कर दिया। इसके जवाब में चीनी नौसेना और वायुसेना ने संयुक्त कारवाई की। उस जहाज को ट्रैक किया और उसे क्षेत्र छोड़ने को मजबूर किया। चीन का कहना है कि यह उसकी संप्रभुता और सुरक्षा के खिलाफ सीधी चुनौती है। वहीं पश्चिमी देशों का मानना है कि दक्षिण चीन सागर अंतरराष्ट्रीय जल क्षेत्र है और वहां सभी देशों को आवाजाही की स्वतंत्रता प्राप्त है। दक्षिण चीन सागर इसलिए भी बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बेहद अहम समुद्री मार्गों में से एक है। यहां से हर साल खरबों डॉलर का व्यापार गुजरता है। इसके अलावा यह क्षेत्र तेल, गैस और समुद्री संसाधनों से भी समृद्ध है। चीन इस क्षेत्र के बड़े हिस्से पर अपना दावा करता है। जबकि फिलीपींस, वियतनाम, मलेशिया और ब्रूनेई जैसे देश भी अपने अधिकार जताते रहे हैं। अमेरिका और यूरोपीय देश अक्सर फ्रीडम ऑफ नेविगेशन यानी कि समुद्री स्वतंत्रता के नाम पर यहां अपने युद्धपोत भेजते रहे हैं जिससे चीन उकसावे की कारवाई मानता है। सूत्र के मुताबिक समुद्र में स्थिति काफी तनावपूर्ण थी जब इस तरह के हालात बन गए थे। चीनी नौसेना के जहाज और लड़ाकू विमान लगातार डच फ्रिगेट की निगरानी कर रहे थे। रेडियो संदेश के जरिए चेतावनी दी जा रही थी और दोनों पक्षों के बीच सैन्य सतर्कता बढ़ गई थी। ऐसे हालात में एक अगर छोटी सी भी कोई चूक होती तो फिर हालात और भी ज्यादा बिगड़ सकते थे। इस घटना ने एक बार फिर से यह सवाल खड़ा किया है कि क्या दक्षिण चीन सागर आने वाले समय में वैश्विक संघर्ष का एक बड़ा केंद्र बनेगा क्योंकि जिस तरह से चीन दक्षिण चीन सागर में गुंडागर्दी करने पर उतारू है उससे पता चलता है चीन के इरादे अच्छे नहीं है।

'EAEU-भारत में ट्रेड एग्रीमेंट लचीले बनाने पर बातचीत', पुतिन ने दिए बड़े समझौते के संकेत, क्यों अहम है 5 देशों का ये गुट

एजेंसी मॉस्को

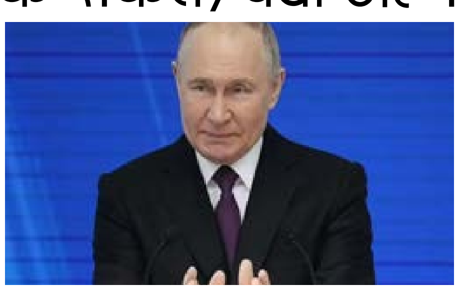

यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन (EAEU) और भारत व्यापार समझौतों को उदार बनाने पर काम कर रहे हैं। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा है कि EAEU और भारत के बीच व्यापार उदारीकरण पर बातचीत तेज हो गई है। यह दोनों पक्षों के बीच मुक्त व्यापार समझौता करने के प्रयासों में नई गति का संकेत है। उन्होंने संकेत दिया है कि दोनों पक्षों के बीच मुक्त व्यापार समझौता जल्द संभव है। आने वाले समय में व्यापार के क्षेत्र में कुछ बड़े फैसले हो सकते हैं। रूसी सरकारी समाचार एजेंसी तास के अनुसार, शुक्रवार को कजाकिस्तान की राजधानी अस्ताना में सुप्रीम यूरेशियन इकोनॉमिक काउंसिल में पुतिन ने बताया कि पिछले साल मंगोलिया, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), इंडोनेशिया के साथ व्यापार समझौते पूरे हुए हैं। इससे भारत के साथ व्यापार उदारीकरण (ट्रेड लिबरेलाइजिंग) पर वार्ता ने जोर पकड़ा है। EAEU पांच सदस्यों वाला आर्थिक समूह है, जिसमें रूस, बेलारूस, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान और आर्मेनिया शामिल हैं। इसकी स्थापना 2015 में साझा बाजार, व्यापार बाधाओं को खत्म करने और सदस्य देशों के बीच आर्थिक नीतियों के समन्वय के जरिए आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए की गई थी। व्लादिमीर पुतिन ने EAEU की बैठक में कहा कि हम नए साझेदारों के साथ मुक्त व्यापार समझौतों पर बातचीत शुरू करने के मसौदा निर्णयों का समर्थन करते हैं। इस तरह की प्रगति के सभी पहलुओं का सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया जाएगा। आपस में जुड़ाव संगठन के हर सदस्य देश को फायदा पहुंचाता है। मैं इस बात पर विशेष रूप से जोर देना चाहूंगा कि सुप्रीम यूरेशियन आर्थिक संघ के सभी देशों के साथ अपने गठबंधन के संबंधों को और मजबूत करना रूस के लिए एक परम प्राथमिकता है। भारत-EAEU मुक्त व्यापार समझौता (FTA) प्रक्रिया लगातार बढ़ रही है। अगस्त 2025 में भारत और EAEU ने औपचारिक रूप से FTA बातचीत शुरू करने के लिए 'टर्म्स ऑफ रेफरेंस' (संदर्भ की शर्तें) पर हस्ताक्षर किए थे। दोनों पक्षों ने इस बात का जिक्र किया है कि पिछले वर्ष द्विपक्षीय व्यापार का कुल मूल्य 69 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंचा, जो 2023 की तुलना में सात प्रतिशत ज्यादा है। इस बातचीत का पहला दौर पिछले साल 26 से 28 नवंबर तक आयोजित किया गया था। इस साल बातचीत को रफ्तार मिली, जब नई दिल्ली ने अपनी BRICS अध्यक्षता के तहत EAEU के साथ व्यापार एकीकरण को प्राथमिकता के रूप में देखा। पुतिन ने कहा है कि कई देश और संगठन सहयोग में रूचि दिखा रहे हैं। EAEU सभी साझेदारों के साथ पारस्परिक रूप से लाभकारी और न्यायसंगत जुड़ाव के लिए हमेशा तैयार है। मौजूदा हालात की बारीकियों को देखते हुए यूरेशियाई देशों का आपस में गहरा जुड़ाव हमारे संगठन के हर सदस्य देश को फायदा पहुंचाता है। यह व्यापार से आय और हमारे देशों की जनता के जीवन स्तर को बेहतर बनाता है। नई दिल्ली में रूस के राजदूत डेनिस अलीपोव ने कहा है कि रूस शिक्षा के क्षेत्र में भारत के साथ सहयोग के नए रास्ते तलाशने एवं मौजूदा ढांचे का विस्तार करने के लिए उत्सुक है। दूसरे रूस-भारत शिक्षा शिखर सम्मेलन में अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि हमारा सहयोग विश्वविद्यालयों से परे भी विस्तारित होना चाहिए। रूसी राजदूत ने कहा कि इसे स्कूलों, भाषा और संस्कृति कार्यक्रमों, युवाओं की आकांक्षाओं और उन उद्योगों तथा व्यवसायों तक पहुंचना चाहिएस जो हमारे राष्ट्रों के भविष्य को आकार देंगे। अलीपोव ने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा शिखर सम्मेलन दोनों देशों के बीच शैक्षिक संबंधों की बढ़ती मजबूती को दर्शाता है।

'रूस से एक-एक इंच जमीन की रक्षा करेंगे', रोमानिया पर ड्रोन गिरने से भड़का NATO, पुतिन को सीधी चेतावनी

एजेंसी बुखारेस्ट

रूसी ड्रोन के रोमानियाई में एक इमारत से टकराने पर नाटो भड़क गया है। नाटो प्रमुख मार्क रुटे ने इस घटना पर प्रतिक्रिया देते हुए रोमानिया के प्रति एकजुटता दिखाई है। नाटो (नॉर्थ अटलांटिक ट्रीटी ऑर्गेनाइजेशन) ने सदस्य देशों की 'एक-एक इंच' जमीन की रक्षा करने की बात कही है। रोमानिया नाटो का सदस्य देश है, ऐसे में इस हमले ने यूरोप और नाटो देशों के बीच रूस को लेकर गुस्सा बढ़ा दिया है। रोमानिया के दक्षिण-पूर्वी शहर गलाती में (यूक्रेन सीमा के पास) रिहायशी अपार्टमेंट पर रूसी ड्रोन शुक्रवार सुबह गिरा। इससे दो नागरिक घायल हो गए। यह 2022 में रूस के यूक्रेन पर आक्रमण के बाद से रोमानियाई क्षेत्र में सुरक्षा के गंभीर उल्लंघनों में से है। इस पर ना सिर्फ नाटो बल्कि यूरोपीय संघ, जर्मनी और यूक्रेन की ओर से भी कड़ी प्रतिक्रिया आई है। नाटो चीफ मार्क रुटे ने बताया है कि रूसी ड्रोन हमले के बाद उन्होंने रोमानिया के राष्ट्रपति निकुसोर डैन से बात की है। हमने उनसे सहयोगी देशों के इलाके की रक्षा करने के लिए नाटो की प्रतिबद्धता को दोहराया है। रुटे ने कहा कि मैंने पुष्टि की है कि नाटो सभी सहयोगी देशों के इलाके के हर इंच की रक्षा करने के लिए तैयार है। मार्क रुटे ने आगे कहा कि हमारा गठबंधन (नाटो) किसी भी खतरे से बचाव करने और उसे रोकने के लिए अपनी तैयारियों को मजबूत करना जारी रखेगा। इसमें रूस के ड्रोन से पैदा होने वाला खतरा भी शामिल है। रोमानियाई अधिकारियों ने इस हमले को बेहद गंभीर बताते हुए रूस के राजदूत को तलब किया है। रोमानिया की हवाई सीमा में रडार पर दिखाई दिया यह ड्रोन गलाती शहर की एक इमारत की छत से टकरा गया, जिसके बाद वहां आग लग गई। घटना में दो लोगों को मामूली चोटें आईं और कई लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया। डेन्यूब नदी के किनारे बसा गलाती शहर मोल्दोवा और यूक्रेन की सीमाओं के पूर्व में स्थित है। राष्ट्रपति डैन ने रोमानिया की राष्ट्रीय रक्षा परिषद की एक आपात बैठक में हमले को यूक्रेन युद्ध की शुरुआत के बाद से अपने इलाके पर हुआ अब तक का सबसे गंभीर हमला बताया। रोमानिया के रक्षा मंत्रालय ने बताया कि रोमानियाई हवाई क्षेत्र में ड्रोन का पता चलने के बाद दो F-16 लड़ाकू विमानों को तुरंत रवाना किया गया। रोमानिया ने ड्रोन-रोधी रक्षा प्रणालियों की तेजी से तैनाती की बात कही है। यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन ने इस हमले की निंदा करते हुए कहा कि रूस के इस युद्ध ने एक और सीमा पार कर दी है। उन्होंने कहा, 'एक रूसी ड्रोन ने रोमानिया के घनी आबादी वाले इलाके में घुसपैठ कर हमला किया। इससे आम नागरिक घायल हो गए। यह हमला EU के इलाके में हुआ है। हम रोमानिया और वहां के लोगों के साथ पूरी तरह से एकजुट होकर खड़े हैं।'

'चीन-पाकिस्तान के खिलाफ भारत की युद्धक अभियानों की तैयारी जारी', ब्रिटिश थिंक टैंक IISS का पड़ोसी देशों पर बड़ा खुलासा

एजेंसी बीजिंग

चीन और पाकिस्तान की ओर से सुरक्षा के मामले में भारत किसी भरोसे की स्थिति में नहीं है। भारत अपने इन दोनों पड़ोसियों के साथ 'ना शांति ना युद्ध' जैसी स्थिति का सामना कर रहा है। भारतीय फौज लगातार चीन और पाकिस्तान से पैदा होने वाले खतरों के खिलाफ बड़े पैमाने पर पारंपरिक युद्ध अभियानों की तैयारी जारी रखे हुए है। इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर स्ट्रेटेजिक स्टडीज (IISS) की एक नई रिपोर्ट में यह दावा किया गया है। ब्रिटिश थिंक टैंक IISS की रिपोर्ट के मुताबिक, भारत की सैन्य योजना में चीन और पाकिस्तान के दोहरे खतरे को प्राथमिकता दी जा रही है। ऐसे में भारतीय सेना बड़े पैमाने पर क्षेत्रीय संघर्ष की संभावना के लिए तैयारी कर रहा है। चीन-पाकिस्तान से क्षेत्रीय विवाद, पारंपरिक युद्ध की तैयारी और सैन्य सिद्धांतों के विकास को बढ़ावा दे रहे हैं। 'ना शांति, ना युद्ध' का माहौल सिंगापुर में होने वाले 'शांगरी-ला डायलॉग' सुरक्षा शिखर सम्मेलन से पहले गुरुवार को को जारी की गई इस रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत का पाकिस्तान के साथ नियंत्रण रेखा (LoC) पर और चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर तनाव बना हुआ है। ऐसे में इंडियन आर्मी अपनी 'पारंपरिक युद्ध अभियानों' के लिए तैयारी जारी रखे हुए है। 'भारत वर्तमान में एक मिश्रित सुरक्षा परिदृश्य का सामना कर रहा है। इसे चीन और पाकिस्तान दोनों के साथ ना युद्ध, ना शांति की स्थिति कह सकते है। चीन के साथ भारत के सीमा विवाद पारंपरिक प्रकृति के हैं। इसलिए भारत-पाकिस्तान संकट तुलना में इनके पूर्ण-स्तरीय युद्ध में बदलने की संभावना कम है लेकिन निकट भविष्य में सीमा भारी सैन्यीकरण वाली बनी रहेगी।' भारत के लिए यह एक मिला-जुला (हाइब्रिड) मामला है। चीन और पाकिस्तान के साथ ना तो पूरी तरह युद्ध की स्थिति है और ना ही पूरी तरह शांति की। भारत का सैन्य सिद्धांत इन दोनों पड़ोसी देशों के साथ बार-बार होने वाले टकरावों से मिले ऑपरेशनल अनुभवों के आधार पर लगातार विकसित होता रहा है। रिपोर्ट में विशेष रूप से 2016, 2019 और 2025 में पाकिस्तान के खिलाफ भारत की स्ट्राइक की बात करती है। ये स्ट्राइक व्यापक सैन्य सिद्धांतों की सोच को प्रभावित कर रही हैं। सीमा-पार आतंकवाद के खिलाफ 'स्वीकार्य सैन्य प्रतिक्रिया' की परिभाषा को फिर से तय करने की नई दिल्ली की इच्छा भारत की रणनीतिक स्थिति की महत्वपूर्ण विशेषता बन गई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि पाकिस्तान के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक्स का विकास यह दिखाता है कि कैसे ऑपरेशनल अभ्यास, सैन्य सिद्धांतों के विकास को आकार देने में मदद कर सकते हैं। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि भारत की सैन्य सोच दशकों के संघर्ष के अनुभवों से, विशेष रूप से पाकिस्तान के संदर्भ में बहुत अधिक प्रभावित हुई है। व्यापक हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बढ़ती रणनीतिक प्रतिस्पर्धा के बावजूद रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि भारत के अपने तत्काल 'रुचि के क्षेत्र' से बाहर कोई सक्रिय सैन्य भूमिका नहीं निभाएगा। IISS के आकलन के अनुसार, ताइवान को लेकर अमेरिका और चीन के बीच होने वाले किसी संभावित सैन्य टकराव में सीधे तौर पर शामिल होने से भारत बचेगा।

'अमेरिका होर्मुज से नौसैनिक नाकेबंदी हटाएगा', ट्रंप का बड़ा ऐलान, ईरान से समझौते पर 'फाइनल' बैठक

एजेंसी वॉशिंगटन

अमेरिका होर्मुज स्ट्रेट के आसपास और ईरानी बंदरगाहों पर लगी अपनी नौसैनिक नाकाबंदी हटाएगा। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि होर्मुज दोनों दिशाओं में खुलना चाहिए और हम अपना ब्लॉकेड हटाएंगे। ट्रंप ने शुक्रवार को ट्रूथ सोशल पर अपनी पोस्ट में कई शर्तें रखी हैं, जिनके बारे में उन्होंने कहा है कि ईरान को समझौते के हिस्से के तौर पर इनको स्वीकार करना चाहिए। ट्रंप ने कहा है कि ईरान के साथ समझौते पर अंतिम फैसला लेने के लिए वाइट हाउस के सिचुएशन रूम में बैठक करने जा रहे हैं। ईरान के साथ समझौते को लेकर अहम बैठक से पहले यूएस प्रेसिडेंट डोनाल्ड ट्रंप ने कहा, 'ईरान को इस बात पर राजी होना होगा कि वे कभी भी कोई न्यूक्लियर हथियार या बम नहीं रखेंगे। हमें लगता है कि होर्मुज जलडमरूमध्य को तुरंत खोल दिया जाना चाहिए। ये बिना कि बिना किसी टोल के खुलना चाहिए ताकि दोनों दिशाओं में जहाजों की आवाजाही बिना किसी रोक-टोक के हो सके।' डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि अमेरिका ने अपने बेहतरीन अंडरवॉटर माइन स्वीपर्स की मदद से कई माइन्स पहले ही हटा दी हैं। ईरान बाकी बची हुई सभी माइन्स को तुरंत हटाएगा, जो अब ज्यादा नहीं बची होंगी। हमारी जबरदस्त और बेमिसाल नाकेबंदी की वजह से जो जहाज होर्मुज जलडमरूमध्य में फंस गए थे, वो निकल सकते हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि अमेरिका की ओर से लगाई नाकेबंदी हटा ली जाएगी। अब फंसे हुए जहाज घर वापसी की प्रक्रिया शुरू कर सकते हैं। मैं फंसे हुए लोगों से कहूंगा कि आप अपनी पत्नियों, पतियों, माता-पिता और परिवारों को मिलने के बाद मेरी तरफ से यानी आपके सबसे पसंदीदा प्रेसिडेंट की तरफ से हेलो कहिएगा। ईरान को इस बात पर सहमत होना होगा कि वह परमाणु बम नहीं बनाएगा। स्ट्रेट ऑफ होर्मुज को तुरंत खोला जाना चाहिए, वो भी बिना किसी शुल्क के ताकि दोनों तरफ से जहाजों की आवाजाही निर्बाध रूप से हो सके। हम निकालेंगे ईरान का यूरेनियमः ट्रंप ईरान के यूरेनियम पर डोनाल्ड ट्रंप ने अपनी पोस्ट में कहा कि उनका एनरिच्ड मटीरियल यानी न्यूक्लियर डस्ट 11 महीने पहले हमारे शक्तिशाली B2 बॉम्बर के हमले की वजह से ढह चुके पहाड़ों के मलबे के नीचे बहुत गहराई में दबा हुआ है। उसे अमेरिका बाहर निकालेगा क्योंकि अमेरिया या चीन के पास ही ऐसा करने की तकनीकी क्षमता है। ट्रंप ने दावा किया है यूरेनियम निकालने का काम यह काम ईरान और इंटरनेशनल एटॉमिक एनर्जी एजेंसी (IAEA) के साथ उनके सहयोग से किया जाएगा और उस मटीरियल को पूरी तरह से नष्ट कर दिया जाएगा। अगली सूचना मिलने तक इस सौदे में किसी भी तरह के पैसे का लेन-देन नहीं किया जाएगा। डोनाल्ड ट्रंप ने अपनी पोस्ट के आखिर में कहा कि कम अहमियत वाली कुछ दूसरी बातों पर भी सहमति बन गई है। मैं अब सिचुएशन रूम में एक मीटिंग करने जा रहा हूं ताकि इस मामले पर अंतिम फैसला लिया जा सके।

दूसरे क्वालीफायर मुकाबले में गुजरात टाइटंस ने राजस्थान रॉयल्स को 7 विकेट से हराया

एजेंसी नई दिल्ली

आईपीएल 2026 के दूसरे क्वालीफायर मुकाबले में गुजरात टाइटंस ने राजस्थान रॉयल्स को 7 विकेट से हराया। इस मुकाबले में वैभव सूर्यवंशी, साई सुदर्शन और शुभमन गिल की दमदार पारियों ने ऑरेंज कैप की रेस को बेहद रोमांचक बना दिया है। वहीं, पर्पल कैप पर कगिसो रबाडा का कब्जा हो गया है। आरआर की तरफ से दूसरे क्वालीफायर मुकाबले में वैभव सूर्यवंशी ने बेहतरीन बल्लेबाजी करते हुए 47 गेंदों में 96 रनों की शानदार पारी खेली। अपनी इस पारी के साथ ही वैभव ऑरेंज कैप को अपने पास रखने में सफल रहे हैं। 15 वर्षीय बल्लेबाज ने सीजन का अंत 16 मुकाबलों में 237 के स्ट्राइक रेट से खेलते हुए 776 रनों के साथ किया। वहीं जीटी को जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाने वाले शुभमन गिल ऑरेंज कैप की रेस में अब दूसरे पायदान पर आ गए हैं।

शुभमन गिल ने आरआर के खिलाफ 53 गेंदों में 104 रनों की लाजवाब पारी खेली। वह आईपीएल 2026 में खेले 15 मुकाबलों में 722 रन बना चुके हैं। गिल के सलामी जोड़ीदार साई सुदर्शन 16 मुकाबलों में 710 रन बनाकर तीसरे नंबर पर हैं। सनराइजर्स हैदराबाद के विकेटकीपर-बल्लेबाज हेनरिक क्लासेन 15 मुकाबलों में 624 रनों के साथ लिस्ट में चौथे नंबर पर काबिज हैं, जबकि ईशान किशन 602 रनों के साथ पांचवें स्थान पर हैं।

जीटी के तेज गेंदबाज कगिसो रबाडा ने पर्पल कैप पर भुवनेश्वर कुमार की बादशाहत को खत्म कर दिया है। पर्पल कैप पर कगिसो रबाडा का कब्जा हो गया है। रबाडा ने दूसरे क्वालीफायर मुकाबले में 2 विकेट चटकाए। रबाडा के नाम अब 28 विकेट हो गए हैं। 15 मुकाबलों में 26 विकेट के साथ भुवनेश्वर दूसरे स्थान पर खिसक गए हैं।

वहीं, राजस्थान रॉयल्स के तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर 25 विकेट लेकर तीसरे नंबर पर हैं। चेन्नई सुपर किंग्स के गेंदबाज अंशुल कंबोज 14 मुकाबलों में 21 विकेट के साथ चौथे और सनराइजर्स हैदराबाद के गेंदबाज ईशान मलिंगा 20 विकेट लेकर पांचवें पायदान पर मौजूद हैं। आईपीएल 2026 का खिताबी मुकाबला रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और गुजरात टाइटंस के बीच रविवार को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाएगा।

अमेरिका में फिर गूंजा भारत का नाम, श्रेय पारिख बने स्पेलिंग बी प्रतियोगिता, दबदबा कायम

एजेंसी नई दिल्ली

अमेरिका में आयोजित प्रतिष्ठित स्पेलिंग प्रतियोगिता में एक बार फिर भारतीय मूल के छात्र ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। कैलिफोर्निया के रैंचो कुकामोंगा में रहने वाले 14 वर्षीय श्रेय पारिख ने स्क्रिप्स नेशनल स्पेलिंग बी प्रतियोगिता का खिताब अपने नाम कर लिया है। यह अमेरिका की सबसे पुरानी और बड़ी शैक्षणिक खेलों में गिनी जाती है। फाइनल मुकाबले में श्रेय पारिख ने बेहद शानदार प्रदर्शन करते हुए केवल डेढ़ मिनट से कुछ अधिक समय में 32 कठिन शब्दों की सही स्पेलिंग बताकर निर्णायकों और दर्शकों को प्रभावित कर दिया। मुकाबले के दौरान श्रेय लगातार तेजी से शब्दों की स्पेलिंग बताते रहे और बिना रुके अगले दौर में पहुंचते गए। हालांकि "साइडिडाउ", "सॉडर" और "उआयब" जैसे शब्दों में उन्हें हल्की परेशानी हुई, लेकिन इससे उनके आत्मविश्वास पर कोई असर नहीं पड़ा। मौजूद जानकारी के अनुसार अंतिम और निर्णायक शब्द "कैशॉ" था, जिसकी सही वर्तनी बताकर श्रेय ने प्रतियोगिता अपने नाम कर ली है। जैसे ही समय समाप्त होने की घोषणा हुई, पूरा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। गौरतलब है कि यह मुकाबला काफी रोमांचक रहा। फाइनल में श्रेय का सामना 12 वर्षीय ईशान गुप्ता से हुआ था। दोनों के बीच 90 सेकंड का तेज रफ्तार स्पेल-ऑफ राउंड हुआ, जिसमें श्रेय ने 32 शब्दों की सही वर्तनी बताई, जबकि ईशान 25 शब्द ही सही बता सके हैं। यह प्रतियोगिता अमेरिका की राजधानी वॉशिंगटन में आयोजित हुई। बता दें कि श्रेय पारिख पहले से ही इस प्रतियोगिता के मजबूत दावेदार माने जा रहे थे। वर्ष 2024 में वह तीसरे स्थान पर रहे थे। वहीं पिछले साल स्कूल स्तर की प्रतियोगिता में बुखार के बावजूद हिस्सा लेने के कारण वह आगे नहीं बढ़ पाए थे। इसके बाद उन्होंने लगातार मेहनत की और कई ऑनलाइन प्रतियोगिताओं में जीत दर्ज की। श्रेय सिर्फ पढ़ाई में ही नहीं बल्कि अन्य गतिविधियों में भी काफी रुचि रखते हैं। उन्हें टेनिस खेलना, किताबें पढ़ना, गणित और शतरंज पसंद है। इसके अलावा वह अपने स्कूल बैंड में ताल वाद्य यंत्र भी बजाते हैं। वह स्नेयर ड्रम, बेस ड्रम, टिम्पानी, ट्रायंगल, ग्लॉकनस्पील और मरीम्बा जैसे कई वाद्य यंत्रों में निपुण माने जाते हैं। श्रेय को भारत आकर अपने दादा-दादी के साथ समय बिताना भी काफी पसंद है। उनकी इस उपलब्धि को भारतीय मूल के समुदाय के लिए गर्व की बात माना जा रहा है। गौरतलब है कि हाल के वर्षों में भारतीय मूल के छात्रों का इस प्रतियोगिता में दबदबा लगातार बना हुआ है। वर्ष 2025 में डलास, टेक्सास के 13 वर्षीय फैजान जाकी ने यह खिताब जीता था। वहीं वर्ष 2024 में 12 वर्षीय भारतीय मूल के छात्र ब्रुहत सोमा ने प्रतियोगिता में जीत दर्ज की थी। उस दौरान उन्होंने 90 सेकंड में 30 में से 29 कठिन शब्दों की सही वर्तनी बताकर सबको चौंका दिया था। उन्हें प्रतियोगिता जीतने पर 50 हजार अमेरिकी डॉलर यानी करीब 41 लाख रुपये की पुरस्कार राशि भी मिली थी। स्क्रिप्स नेशनल स्पेलिंग बी प्रतियोगिता में भारतीय मूल के बच्चों का लगातार शानदार प्रदर्शन यह दिखाता है कि शिक्षा और भाषा कौशल के क्षेत्र में भारतीय समुदाय का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है। अमेरिका में आयोजित प्रतिष्ठित स्पेलिंग प्रतियोगिता में एक बार फिर भारतीय मूल के छात्र ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। कैलिफोर्निया के रैंचो कुकामोंगा में रहने वाले 14 वर्षीय श्रेय पारिख ने स्क्रिप्स नेशनल स्पेलिंग बी प्रतियोगिता का खिताब अपने नाम कर लिया है। यह अमेरिका की सबसे पुरानी और बड़ी शैक्षणिक प्रतियोगिताओं में गिनी जाती है। फाइनल मुकाबले में श्रेय पारिख ने बेहद शानदार प्रदर्शन करते हुए केवल डेढ़ मिनट से कुछ अधिक समय में 32 कठिन शब्दों की सही वर्तनी बताकर निर्णायकों और दर्शकों को प्रभावित कर दिया। मुकाबले के दौरान श्रेय लगातार तेजी से शब्दों की वर्तनी बताते रहे और बिना रुके अगले दौर में पहुंचते गए। हालांकि "साइडिडाउ", "सॉडर" और "उआयब" जैसे शब्दों में उन्हें हल्की परेशानी हुई, लेकिन इससे उनके आत्मविश्वास पर कोई असर नहीं पड़ा।

अंतिम और निर्णायक शब्द "कैशॉ" था, जिसकी सही वर्तनी बताकर श्रेय ने प्रतियोगिता अपने नाम कर ली है। जैसे ही समय समाप्त होने की घोषणा हुई, पूरा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। श्रेय के चेहरे पर राहत भरी मुस्कान दिखाई दी और लगातार बजर दबाने के कारण उन्होंने अपने हाथों की उंगलियां भी फैलाकर आराम दिया है। गौरतलब है कि यह मुकाबला काफी रोमांचक रहा। फाइनल में श्रेय का सामना 12 वर्षीय ईशान गुप्ता से हुआ था। दोनों के बीच 90 सेकंड का तेज रफ्तार स्पेल-ऑफ राउंड हुआ, जिसमें श्रेय ने 32 शब्दों की सही वर्तनी बताई, जबकि ईशान 25 शब्द ही सही बता सके हैं। यह प्रतियोगिता अमेरिका की राजधानी वॉशिंगटन में आयोजित हुई है। बता दें कि श्रेय पारिख पहले से ही इस प्रतियोगिता के मजबूत दावेदार माने जा रहे थे। वर्ष 2024 में वह तीसरे स्थान पर रहे थे। वहीं पिछले साल स्कूल स्तर की प्रतियोगिता में बुखार के बावजूद हिस्सा लेने के कारण वह आगे नहीं बढ़ पाए थे। इसके बाद उन्होंने लगातार मेहनत की और कई ऑनलाइन प्रतियोगिताओं में जीत दर्ज की है।

श्रेय सिर्फ पढ़ाई में ही नहीं बल्कि अन्य गतिविधियों में भी काफी रुचि रखते हैं। उन्हें टेनिस खेलना, किताबें पढ़ना, गणित और शतरंज पसंद है। इसके अलावा वह अपने स्कूल बैंड में ताल वाद्य यंत्र भी बजाते हैं। वह स्नेयर ड्रम, बेस ड्रम, टिम्पानी, ट्रायंगल, ग्लॉकनस्पील और मरीम्बा जैसे कई वाद्य यंत्रों में निपुण माने जाते हैं।

श्रेय को भारत आकर अपने दादा-दादी के साथ समय बिताना भी काफी पसंद है। उनकी इस उपलब्धि को भारतीय मूल के समुदाय के लिए गर्व की बात माना जा रहा है।

गौरतलब है कि हाल के वर्षों में भारतीय मूल के छात्रों का इस प्रतियोगिता में दबदबा लगातार बना हुआ है। वर्ष 2025 में डलास, टेक्सास के 13 वर्षीय फैजान जाकी ने यह खिताब जीता था। वहीं वर्ष 2024 में 12 वर्षीय भारतीय मूल के छात्र ब्रुहत सोमा ने प्रतियोगिता में जीत दर्ज की थी। उस दौरान उन्होंने 90 सेकंड में 30 में से 29 कठिन शब्दों की सही वर्तनी बताकर सबको चौंका दिया था। उन्हें प्रतियोगिता जीतने पर 50 हजार अमेरिकी डॉलर यानी करीब 41 लाख रुपये की पुरस्कार राशि भी मिली थी।

स्क्रिप्स नेशनल स्पेलिंग बी प्रतियोगिता में भारतीय मूल के बच्चों का लगातार शानदार प्रदर्शन यह दिखाता है कि शिक्षा और भाषा कौशल के क्षेत्र में भारतीय समुदाय का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है।

आर्सेनल को पहली Trophy का इंतजार, PSG के सामने लगातार दूसरी बार खिताब जीतने की चुनौती

एजेंसी नई दिल्ली

यूरोप की सबसे बड़ी क्लब फुटबॉल प्रतियोगिता अब अपने आखिरी पड़ाव पर पहुंच चुकी है और शनिवार को इसका फाइनल मुकाबला खेला जाएगा। लंबे और रोमांचक सफर के बाद अब खिताब के लिए इंग्लैंड के आर्सेनल और फ्रांस के पेरिस सेंट जर्मेन के बीच भिड़ंत होने जा रही है। फुटबॉल प्रेमियों की नजरें इस बड़े मुकाबले पर टिकी हुई हैं। इस बार की प्रतियोगिता में दोनों टीमों ने शानदार प्रदर्शन किया है। आर्सेनल ने सेमीफाइनल में एटलेटिको मैड्रिड को हराकर फाइनल में जगह बनाई है, जबकि पेरिस सेंट जर्मेन ने बायर्न म्यूनिख को मात देकर खिताबी मुकाबले का टिकट हासिल किया है। बता दें कि पेरिस सेंट जर्मेन पिछले सत्र की विजेता टीम भी रही है। फ्रांसीसी क्लब ने पिछले साल इटली की इंटर मिलान टीम को 5-0 से हराकर पहली बार यह प्रतिष्ठित खिताब जीता था। वह मुकाबला जर्मनी के म्यूनिख स्थित एलियांज एरिना मैदान में खेला गया था। उस मैच में युवा खिलाड़ी देजिरे डुए ने दो गोल दागकर सबका ध्यान अपनी ओर खींचा था। वहीं अशरफ हकीमी, ख्वीचा क्वारात्सखेलिया और सेनी मायुलु ने भी गोल किए थे। गौरतलब है कि उस मुकाबले में स्टार खिलाड़ी उस्मान डेम्बेले गोल नहीं कर सके थे, लेकिन पूरे टूर्नामेंट में उनका प्रदर्शन काफी प्रभावशाली माना गया था। मौजूद जानकारी के अनुसार इस बार भी पेरिस सेंट जर्मेन को खिताब का प्रबल दावेदार माना जा रहा है। हालांकि आर्सेनल को भी यूरोप की उभरती हुई मजबूत टीमों में गिना जा रहा है। इंग्लैंड के इस क्लब ने हाल ही में 22 साल बाद घरेलू लीग का खिताब जीतकर अपनी ताकत का एहसास कराया है। गौरतलब है कि आर्सेनल अब तक यूरोप की इस सबसे बड़ी क्लब प्रतियोगिता का खिताब नहीं जीत सका है। ऐसे में टीम के पास इतिहास रचने का बड़ा मौका रहेगा। दूसरी ओर पेरिस सेंट जर्मेन लगातार दूसरी बार खिताब जीतकर अपना दबदबा कायम रखना चाहेगा। फाइनल मुकाबले में पेरिस सेंट जर्मेन की उम्मीदें एक बार फिर देजिरे डुए और उस्मान डेम्बेले जैसे खिलाड़ियों पर टिकी होंगी। हालांकि डेम्बेले की फिटनेस को लेकर कुछ सवाल बने हुए हैं। अगर वह पूरी तरह फिट नहीं होते हैं तो टीम को बड़ा झटका लग सकता है। फुटबॉल जानकारों का मानना है कि यह मुकाबला बेहद रोमांचक और कांटे की टक्कर वाला हो सकता है। दोनों टीमों के पास युवा और तेज खिलाड़ी मौजूद हैं, जिससे दर्शकों को हाई वोल्टेज मुकाबला देखने को मिल सकता है। यूरोप की सबसे बड़ी क्लब फुटबॉल प्रतियोगिता अब अपने आखिरी पड़ाव पर पहुंच चुकी है और शनिवार को इसका फाइनल मुकाबला खेला जाएगा। लंबे और रोमांचक सफर के बाद अब खिताब के लिए इंग्लैंड के आर्सेनल और फ्रांस के पेरिस सेंट जर्मेन के बीच भिड़ंत होने जा रही है। फुटबॉल प्रेमियों की नजरें इस बड़े मुकाबले पर टिकी हुई हैं। इस बार की प्रतियोगिता में दोनों टीमों ने शानदार प्रदर्शन किया है। आर्सेनल ने सेमीफाइनल में एटलेटिको मैड्रिड को हराकर फाइनल में जगह बनाई है, जबकि पेरिस सेंट जर्मेन ने बायर्न म्यूनिख को मात देकर खिताबी मुकाबले का टिकट हासिल किया है। बता दें कि पेरिस सेंट जर्मेन पिछले सत्र की विजेता टीम भी रही है। फ्रांसीसी क्लब ने पिछले साल इटली की इंटर मिलान टीम को 5-0 से हराकर पहली बार यह प्रतिष्ठित खिताब जीता था। वह मुकाबला जर्मनी के म्यूनिख स्थित एलियांज एरिना मैदान में खेला गया था। उस मैच में युवा खिलाड़ी देजिरे डुए ने दो गोल दागकर सबका ध्यान अपनी ओर खींचा था। वहीं अशरफ हकीमी, ख्वीचा क्वारात्सखेलिया और सेनी मायुलु ने भी गोल किए थे।

व्यापार

दो हफ्तों में 4 बार बढ़ चुकी है कीमत, पेट्रोल-डीजल पर अब आया यह नया अपडेट, टला नहीं है खतरा

एजेंसी नई दिल्ली

राजधानी दिल्ली में पेट्रोल की कीमतें 100 रुपये प्रति लीटर के पार चली गई हैं। मुंबई में ये 110 रुपये से भी ऊपर निकल गई हैं। भारत के बड़े शहरों में दो हफ्तों के अंदर ही ईंधन की कीमतें चार बार बढ़ चुकी हैं। सूत्रों का कहना है कि यह बढ़ोतरी अभी खत्म नहीं हुई है। यानी कीमतों के बढ़ने डर अभी कायम है। ताजा समीक्षा में कीमतें स्थिर रखी गईं। लेकिन, हाल की बढ़ोतरी का कुल असर काफी ज्यादा रहा है। इससे पेट्रोल की कीमत 2.61 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 2.71 रुपये बढ़ गई है। ऐसा इसलिए हुआ है क्योंकि तेल मार्केटिंग कंपनियां उस नुकसान की भरपाई करने की कोशिश कर रही हैं जो महीनों से जमा हो रहा था। जबकि खुदरा कीमतें स्थिर रखी गई थीं। सूत्रों ने 'बिजनेस टुडे टीवी' को बताया कि कीमतों में और बढ़ोतरी की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। हालांकि, भविष्य में होने वाली कोई भी बढ़ोतरी धीरे-धीरे ही होने की उम्मीद है। इसका कारण सीधा-सा है। वह यह है कि तेल कंपनियों को पिछले 75 दिनों में हुए उस नुकसान की भरपाई करनी है, जब कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने के बावजूद खुदरा कीमतें स्थिर रखी गई थीं। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय की संयुक्त सचिव सुजाता शर्मा ने बताया कि तेल कंपनियों

को हर दिन लगभग 750 करोड़ रुपये का नुकसान हो रहा है। उन्होंने कहा कि 15 मई को हुई बढ़ोतरी से इस नुकसान में लगभग एक-चौथाई की कमी आई थी। लेकिन, अभी भी एक बड़ा अंतर बना हुआ है। इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन के एक अधिकारी ने 'इन्फॉर्मिस्ट' को बताया कि कीमतों में धीरे-धीरे बढ़ोतरी करने का फैसला जान-बूझकर लिया गया ताकि महंगाई के असर को सीमित रखा जा सके। अधिकारी ने कहा, 'तेल कंपनियां उपभोक्ताओं को जितना हो सके, उतना बचाने की कोशिश कर रही थीं।' उन्होंने यह भी कहा कि कंपनी को इस बढ़ोतरी के कारण ईंधन की मांग में कोई बड़ी गिरावट आने की उम्मीद नहीं है। अधिकारी ने इस बात को भी कन्फर्म किया कि भविष्य में कीमतों में कितनी बढ़ोतरी होगी, इस बारे में अभी तक कोई निश्चित फैसला नहीं लिया गया है।

भारत के क्या बना मुश्किल का सबब?

भारत में ईंधन की कीमतों में हुई बढ़ोतरी के पीछे कुछ जाने-पहचाने कारण ही हैं। 28 फरवरी को ईरान पर अमेरिका और इजरायल के हमलों के बाद पश्चिम एशिया संघर्ष शुरू हुआ। तब से कच्चे तेल की ग्लोबल कीमतों में 50% से भी ज्यादा की बढ़ोतरी हो चुकी है। ईरान की जवाबी कार्रवाई के कारण होर्मुज स्ट्रेट से होने वाली सप्लाई में रुकावट आई। यह एक ऐसा संकरा समुद्री रास्ता है जिससे होकर दुनिया के कुल तेल का लगभग पांचवां हिस्सा गुजरता है। तब से लेकर अब तक कच्चे तेल की ग्लोबल कीमतें 100 डॉलर प्रति बैरल के पार चली गई हैं। महीनों लगा रहा भारत में ब्रेक क्रूड की कीमतें लगातार ऊंचे स्तर पर बनी हुई हैं। कीमतों में इतनी भारी बढ़ोतरी होने के बावजूद भारत में खुदरा ईंधन की कीमतें महीनों तक स्थिर रखी गई थीं। सरकार ने कहा कि कीमतों को स्थिर रखने का मकसद कीमतों के प्रति संवेदनशील ग्राहकों को ग्लोबल एनर्जी की कीमतों में होने वाले उतार-चढ़ाव से बचाना था। हालांकि, विपक्षी पार्टियों ने इस फैसले के समय पर सवाल उठाया। कारण- उस समय कई अहम राज्यों में चुनाव चल रहे थे। इस फैसले के पीछे के राजनीतिक इरादों पर भी सवाल खड़े किए।

अमेरिकी दूत ने भारत के लिए कह दी ऐसी बात कि मचेगी पड़ोसियों में खलबली, ट्रेड डील पर दे दिया हिंट

एजेंसी नई दिल्ली

पश्चिम एशिया संघर्ष के बीच भारत में अमेरिका के राजदूत सर्जियो गोर ने भारत की जमकर तारीफ की है। उन्होंने गुरुवार को कहा कि अमेरिका को उम्मीद है कि आने वाले हफ्तों और महीनों में भारत के साथ एक अंतरिम व्यापार समझौता पक्का हो जाएगा। कारण है कि दोनों देश आर्थिक और तकनीकी संबंधों को और गहरा करने पर काम कर रहे हैं। सर्जियो गोर का यह दो-टूक मैसेज चीन और पाकिस्तान में खलबली पैदा करेगा। अमेरिका का भारत के साथ समझौता होना उन्हें कतई रास नहीं आएगा। नए मौकों का फायदा उठाने के मामले में भारत और अमेरिका की साझेदारी से बेहतर स्थिति में कोई दूसरी साझेदारी नहीं है। इसमें टेक्नोलॉजी का क्षेत्र भी शामिल है। सर्जियो गोर, भारत में अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर ने दिल्ली में कहा, 'अंतरिम व्यापार समझौता हमारे सामने है, जिसे हम पक्का करने वाले हैं। इससे दोनों देशों के लिए समृद्धि के नए रास्ते खुलेंगे।' अमेरिकी राजदूत ने आगे कहा, 'हमें पूरी उम्मीद है कि यह व्यापार समझौता अगले कुछ हफ्तों और महीनों में साइन हो जाएगा।' दोनों देशों के बीच संबंधों

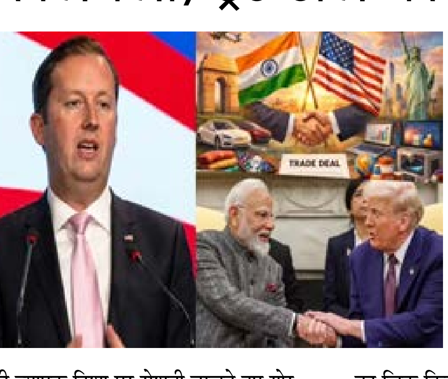

की व्यापक दिशा पर रोशनी डालते हुए गोर ने कहा कि अलग-अलग क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच सहयोग बढ़ाने की काफी गुंजाइश है। उन्होंने कहा, 'अमेरिका-भारत संबंधों को आगे बढ़ाने की असीम संभावनाएं हैं।' राजदूत ने कहा कि वॉशिंगटन अब भारत की आर्थिक और तकनीकी ताकत को ज्यादा से ज्यादा पहचान रहा है। भारत के साथ अपने जुड़ाव को और मजबूत करने का इच्छुक है।

गोर ने कहा, 'अमेरिका-भारत संबंधों को एक ज्यादा सहज आर्थिक रिश्ते में बदलने का एक शानदार मौका है।' उन्होंने आगे कहा कि उभरते हुए मौकों का फायदा उठाने के मामले में भारत और अमेरिका की साझेदारी से बेहतर स्थिति में कोई दूसरी साझेदारी नहीं है। यह बात खासतौर से टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में है। वह बोले, 'नए मौकों का फायदा उठाने के मामले में भारत और अमेरिका की साझेदारी से बेहतर स्थिति में कोई दूसरी साझेदारी नहीं है। इसमें टेक्नोलॉजी का क्षेत्र भी शामिल है।' टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में सहयोग का जिक्र गोर ने टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में सहयोग का जिक्र किया। कहा कि अमेरिका भारत के साथ और गहरा सहयोग करने में मदद के लिए अपने निर्यात नियंत्रण नियमों की सक्रियता से समीक्षा कर रहा है। राजदूत ने 'पैक्स सिलिका' (Pax Silica) में भारत की भागीदारी पर भी जोर दिया। कहा कि यह इस बात का सबूत है कि अमेरिका को भारत की क्षमताओं पर कितना भरोसा है। उन्होंने कहा, 'भारत उन पहले 10 देशों में शामिल था जिन्होंने 'पैक्स सिलिका' में हिस्सा लिया। इसकी वजह यह है कि हमें इस जगह पर, यहां के लोगों पर, यहां की टेक्नोलॉजी पर और आपकी सरकार पर पूरा भरोसा है। यह एक ऐसी साझेदारी है जिसे हम और आगे बढ़ाना चाहते हैं।'

FSSAI ने IRCTC को भेजा नोटिस, अश्विनी वैष्णव और जेपी नड्डा के मंत्रालयों के संस्थान इसलिए आमने-सामने

एजेंसी नई दिल्ली

फूड रेगुलेटर FSSAI ने IRCTC को नोटिस जारी किया है। यह तय स्वच्छता और सफाई की जरूरतों के उल्लंघन को लेकर है। 'फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स (लाइसेंसिंग एंड रजिस्ट्रेशन ऑफ फूड बिजनेस) एक्ट, 2011' के शेड्यूल 4 के तहत इसे जारी कयिा गया है। इन रेगुलेशंस के अनुसार, खाद्य व्यवसाय संचालकों के लिए यह जरूरी है कि वे भोजन की प्रोसेसिंग, उसे संभालने, धोने और सफाई के दौरान स्वच्छता के उचित तरीकों का पालन करें। इसका मकसद है कि भोजन और भोजन के संपर्क में आने वाली सतहों को दूषित होने से बचाया जा सके। वहीं, IRCTC का कहना है कि इस मामले में उसे FSSAI से कोई नोटिस नहीं मिला है। नियमों के अनुसार, मोबाइल कैटरिंग यूनिट्स FSSAI प्राधिकरणों की ओर से ऑपरेट नहीं होते हैं। इसके बजाय नामित रेलवे अथॉरिटी की ओर से जारी FSSAI लाइसेंस के तहत संचालित होते हैं। न्यूज एजेंसी एएनआई ने बताया कि सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे एक वीडियो के जरिये FSSAI के संज्ञान में यह बात आई है कि ट्रेन संख्या 12223 – LTT ERS दुरंतो में खानपान सेवाओं के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले बर्तनों को ट्रेन के टॉयलेट के अंदर ही धोया जा रहा है। खानपान सेवा में लगे कर्मचारी/ठेके पर रखे गए कर्मी ऐसा कर रहे हैं। इस पर आईआरसीटीसी की प्रतिक्रिया आई। उसने बताया कि यह 24 मई, 2026 की घटना है। इसके संबंध में तत्काल कार्रवाई की गई। सेवा प्रदाता पर जुर्माना लगाया गया। संबंधित कर्मचारियों को ड्यूटी से हटा दिया गया। कॉरपोरेरेशन ने कहा कि यात्रियों की सुरक्षा सर्वोपरि है। आरआरसीटीसी स्वच्छता के कड़े प्रोटोकॉल का पालन करता है। किसी भी उल्लंघन के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई करता है। IRCTC ने कहा कि यह स्पष्ट किया जाता है कि इस मामले में FSSAI से कोई नोटिस नहीं मिला है। नियमों और विनियमों के अनुसार, मोबाइल कैटरिंग यूनिट्स FSSAI प्राधिकरणों से नहीं चलते हैं।

हरिद्वार के मनसा देवी मंदिर का चमत्कार! यहां पूरी होती है संतान की मुराद

देवभूमि उत्तराखंड में देवी-देवताओं के कई मंदिर हैं। जिनमें से हरिद्वार के बिल्व पर्वत पर मां मनसा देवी का मंदिर स्थित है। मनसा देवी मंदिर भक्तों की आस्था का केंद्र है। इस मंदिर से जुड़ी कई गहरी धार्मिक मान्यताएं सुनने को मिलती है। धार्मिक मान्यता है कि जो भी भक्त सच्चे मन से मां मनसा देवी के दर्शन करता है, मां उसकी सभी मनोकामनाओं को पूरी करती हैं। खास मौके पर मंदिर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ देखने को मिलती है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको मनसा देवी मंदिर के इतिहास और यहां से जुड़ी धार्मिक मान्यता के बारे में बताने जा रहे हैं। मंदिर का इतिहास साल 1811 से 1815 के बीच राजा गोपाल सिंह द्वारा मनसा देवी मंदिर का निर्माण कराया गया था। बता दें कि मनसा देवी मंदिर उन जगहों में शामिल है, जहां पर समुद्र मंथन के दौरान अमृत की कुछ बूंदे गिरी थीं।

इस मंदिर में मनसा देवी की दो मूर्तियां स्थापित हैं। एक मूर्ति के तीन मुख और पांच भुजाएं हैं, तो वहीं दूसरी मूर्ति की आठ भुजाएं और स्वयं देवी सर्प पर विराजमान हैं।

मंदिर की मान्यता धार्मिक मान्यता है कि मां मनसा देवी अपने दरबार में आने वाले हर भक्त की मनोकामना को पूरी करती हैं। माना जाता है कि जो भी भक्त मां के दरबार में सच्चे मन और पूरी श्रद्धा भाव के साथ आता है, वह कभी खाली हाथ नहीं जाता है। वहीं मनसा देवी मंदिर आने से दंपति को संतान सुख की प्राप्ति होती है। वहीं सुहागिन महिलाएं अपने सुहाग की रक्षा और पति की लंबी उम्र के लिए मां मनसा देवी से प्रार्थना करती हैं।

इस प्रकार विधिपूर्वक करें भूखण्ड पर भूमिपूजन एवं शिलान्यास, सुख-समृद्धि का होगा निवास

भूखण्ड पर सर्वप्रथम शेषनाग की स्थिति का आकलन कर उसी अनुसार खुदाई करने के पश्चात् गृहनिर्माण की आगे की विधि नीचे वर्णित है। पाठकों ने पिछले आलेख में शेषनाग की स्थिति, सूर्य के गोचर राशि के अनुसार जाना-समझा, शेषनाग के बाद पृथ्वी की शयन अवस्था, गृह मालिक के घात चक्र आदि का विचार कर शुभ मास, शुभ तिथि, शुभ दिन, शुभ नक्षत्र, शुभ योग, शुभ लग्न का आकलन कर इस प्रकार पूजन करना चाहिए।

सर्वप्रथम शिलान्यास के स्थान पर चौक पूरकर गौरी, गणेश, कलश, नवग्रह आदि को पूजा हेतु स्थापित करें। फिर भूखण्ड स्वामी स्नानादि करके शुद्ध नवीन वस्त्र धारण कर पूर्वाभिमुख बैठकर किसी विद्वान ब्राह्मण द्वारा कुशा से अपने ऊपर एवं पूजन-सामग्री पर जल छिड़कवाकर पवित्र करवाए। फिर ब्राह्मणों द्वारा स्वस्तिवाचन का पाठ एवं गणपति का स्मरण करके गृहारम्भ का संकल्प करें। उसके बाद गणेश, गौरी, कलश, नवग्रह वास्तु एवं अन्य पीठ देवताओं का षोडशोपचार पूजन करके पुष्पांजलि से प्रार्थना करें। फिर चार पान के पत्ते में एक वास्तु चिन्ह रूप में थोड़ा चावल, दूसरे पान पर स्वर्ण या चाँदी का नाग, तीसरे पान पर कच्छप तथा चौथे पान पर पंचरत्न रखकर क्रम से वास्तोष्पति कच्छप वाराह का आह्वान प्रतिष्ठा एवं पूजन आदि करके तांबे के लोटे में डाल दें, लोटे में लाया दूध, दूब भी डाल दें, फिर प्रार्थना करें। तत्पश्चात् पांच शिलायें अथवा ईटें धोकर सामने अलग-अलग रखकर पंचामृत से स्नान कराकर उस पर स्वस्तिक बना लें एवं कुंकुम, चंदन आदि लगाकर वस्त्र या कलावे से ढक दें तथा नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता तथा पूर्णा के नाम से आह्वान, पूजन करके शिलाओं के ऊपर अक्षत छिड़ककर पांचों शिलाओं में क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर, सदाशिव का आह्वान कर ऊँ ब्रह्मणे नमः, ऊँ विष्णवे नमः, ऊँ ईश्वराय नमः, ऊँ सदाशिवाय नमः इन पांच मंत्रों का उच्चारण करते हुये षोडशोपचार पूजन एवं अभिषेक करें।

तत्पश्चात् अक्षत लेकर भूमि का आह्वान एवं पूजन करें। उपलब्ध होने पर एक खैर की खूंटी को सामने रखकर पूजन करके बीचोंबीच जमीन में गाड़ दे, जिससे वह जमीन के अन्दर चली जाये। खूंटी के ऊपर तांबे के उस लोटे को ढक्कन सहित उठाकर रख दे। कलश के ऊपर दीपक भी जलता रहे। चूना, सीमेंट आदि से उसे ढककर उसी के ऊपर एवं चारों ओर पांचों ईटों या शिलाओं की चुनाई कर दें। आवश्यकतानुसार और ईटें या शिलायें लेकर जुड़ाई करके ऊपर सीमेन्ट लगा कर चौकोर चबूतरा बनाकर ऊपर से स्वास्तिक बना दें। फिर स्वास्तिक पर विश्वकर्मा जी का पूजन करके अक्षत-फूल लेकर प्रार्थना करें। अन्त में विष्णुजी एवं विश्वकर्माजी की आरती करके, देव-विसर्जन एवं तिलक, आशीर्वाद ग्रहण करें। फिर ब्राह्मण को भोजन-दक्षिणा दें एवं इष्टमित्रों के साथ प्रसाद आदि ग्रहण करें। इस प्रकार से गृहारम्भ संबंधी मुहूर्त, भूमि-पूजन, नींव पूजन एवं शिलान्यास का विधान ग्रंथों में वर्णित है।

गरुड़ पुराण में बताए गए महापाप, इंसान को पहुंचाते हैं सीधे नर्क

गरुड़ पुराण को हिंदू धर्म में बेहद महत्वपूर्ण माना गया है। इसमें व्यक्ति के अच्छे और बुरे कर्मों से मिलने वाले फल के बारे में विस्तार से बताया गया है। इसमें भगवान विष्णु ने गरुड़ जी क कुछ ऐसे महापापों के बारे में बताया है, जिसको करने वाला व्यक्ति मृत्यु के बाद नरक की कठोर यातनाएं भोगता है। गरुड़ पुराण के चौथे अध्याय में बताया कहा गया है कि अपने कर्मों के अनुसार जीव को 84 लाख योनियों में जन्म लेना पड़ता है। कर्मों के अनुसार वृक्ष, लता, पर्वत, घास जैसी अचल योनियों के अलावा कीट, पशु-पक्षी, जलचर और अन्य योनियों में भटकना पड़ता है। गरुड़ पुराण के अनुसार जो व्यक्ति जीवनभर पापकर्मों में लिप्त रहता हैं औ शुभ कर्मों से दूरी बनाता है उसे मृत्यु के बाद नरक की यातनाएं भुगतनी पड़ती हैं। ऐसे पाप कर्मों को करने वाले व्यक्ति को एक नरक से दूसरे नरक में जाकर दुखों को भोगना पड़ता है। वहीं धर्म और सत्कर्म करने वाले लोगों यमलोक में तीन दिशाओं में स्थित दिव्य मार्गों से आते है। जबकि, पाप कर्मों में लिप्त लोगों को यमलोक में दक्षिण द्वार से ही लाया जाता है। यहीं पर उसके कर्मों का फैसला किया जाता है।

किन लोगों को भोगना पड़ता है नरक

गरुड़ पुराण में वैतरणी नदी का भी वर्णन किया गया है। इसमें कहा गया है कि जो लोग ब्रह्महत्या, गौहत्या, गर्भपात, चोरी, विश्वासघात और दूसरों का धन हड़पने जैसे पाप करते हैं उन्हें मृत्यु के बाद वैतरणी नदी में गिराया जाता है। इसके अलावा गुरु, देवता, वेद-पुराण औ की निंदा करने वाले, छल-कपट करने वाले तथा दूसरों के दुख में प्रसन्न होने वाले लोगों को भी वैतरणी नदी में गिरकर अनेक प्रकार की पीड़ाएं सहनी पड़ती हैं।

गरुड़ पुराण में इन लोगों को बताया गया 'महापापी' गरुड़ पुराण में घर, गांव या जंगल में आग लगाकर दूसरों को कष्ट पहुंचाने वालों को महापापी बताया गया है। ऐसे लोगों को मृत्यु के बाद यमदूत अग्निकुंड में डालते हैं। जहां उनको भयंकर यातनाएं सहनी पड़ती है। जब व्यक्ति जलन से व्याकुल होकर पानी मांगते हैं, तब यमदूत उन्हें खौलता हुआ तेल पीने के लिए देते हैं। जिसके कारण शरीर के अंग और अंदरूनी भाग तक जलने लगते हैं। इस स्थिति के बाद वह कुछ कहने में भी असमर्थ हो जाता है। अंत में सभी योनियों में घूमते हुए जीव मनुष्य योनि को प्राप्त करता है।

आज का राशिफलः मंगल की स्थिति ऊर्जा बढ़ाएगी, जल्दबाजी में वित्तीय निर्णय लेने से बचें

मेष राशि कार्यक्षेत्र में आज आपको किसी अचानक मिलने वाले काम या ज्यादा जिम्मेदारी का सामना करना पड़ सकता है। लग्न भाव में मंगल की उपस्थिति आपके भीतर गजब की कॉम्पिटिटिव ऊर्जा और दृढ़ संकल्प बनाए रखेगी। तृतीय भाव के बुध और गुरु टीमवर्क, प्रेजेंटेशन और संवाद कौशल को पूरा सहयोग दे रहे हैं, विशेषकर मीडिया, लेखन और मार्केटिंग से जुड़े लोग अच्छा प्रदर्शन करेंगे। हालांकि, कार्यस्थल में प्रेशर और जल्दबाजी से बचें।

वृष राशि कार्यक्षेत्र में आज का दिन आपसे कूटनीति और धैर्य की मांग करता है। दशम भाव में राहु की स्थिति आपके करियर में कुछ अप्रत्याशित बदलाव ला सकती है। जो लोग पार्टनरशिप में काम कर रहे हैं, उन्हें बहुत संभलकर चलने की जरूरत है। कार्यस्थल पर किसी की आलोचना या फीडबैक पर भावनात्मक रूप से प्रतिक्रिया देने से बचें। शांत रहकर लिए गए निर्णय आपके प्रोफेशनल सम्मान को बनाए रखेंगे।

मिथुन राशि करियर के मामले में आज का दिन काफी डिमांडिंग और व्यस्तता से भरा रह सकता है। दशम भाव में शनिदेव की उपस्थिति आपसे कड़ा अनुशासन और निरंतर प्रयास की मांग करती है। आपके लग्न भाव में बुध, शुक्र और गुरु की युति होने से आपकी बौद्धिक क्षमता और रणनीतिक प्लानिंग बेहतरीन रहेगी। सहकर्मियों और प्रोफेशनल संपर्कों का पूरा सहयोग मिलेगा। ऑफिस की बैठकों में अपनी वाणी को पूरी तरह संयमित और शांत रखें।

कर्क राशि प्रोफेशनल फ्रंट पर आज का दिन काफी एक्टिव और ऊर्जावान रहने वाला है। दशम भाव में मंगल की स्थिति आपके भीतर करियर में सफल होने की तीव्र महत्वाकांक्षा और लीडरशिप क्वालिटीज को बढ़ाएगी, जिससे आपको अपने काम के लिए सराहना मिल सकती है। द्वादश भाव के बुध और गुरु यह संकेत देते हैं कि आज का दिन बैक-स्टेज प्लानिंग और गोपनीय व्यावसायिक चर्चाओं के लिए अत्यधिक उपयुक्त है।

सिंह राशि करियर के लिहाज से आज का दिन बहुत ही प्रॉडक्टिव साबित होगा। दशम भाव में सूर्यदेव की मजबूत स्थिति आपके कार्यक्षेत्र में महत्वाकांक्षा, अधिकार और मान-सम्मान को बढ़ाएगी। एकादश भाव के बुध और गुरु टीमवर्क और प्रोफेशनल नेटवर्किंग को बेहतरीन बनाएंगे, जिससे आपको अपने सीनियर्स का साथ मिलेगा। सप्तम भाव के राहु सलाह देते हैं कि पार्टनरशिप के कामों में थोड़ी सावधानी बरतें।

कन्या राशि करियर और व्यावसायिक प्रगति के लिए आज का दिन बेहद शानदार रहने वाला है। आपके दशम भाव (कर्म भाव) में लग्न स्वामी बुध, शुक्र और गुरु की युति हो रही है, जो आपको प्रोफेशनल ग्रोथ और नई विजिबिलिटी दिलाएगी। आपकी बुद्धि और प्रैक्टिकल सोच वरिष्ठ अधिकारियों को काफी प्रभावित करेंगे। छठे भाव के राहु आपको कार्यस्थल में विरोधियों पर आसानी से विजय दिलाएंगे।

तुला राशि करियर के मामले में आज का दिन भविष्य की बड़ी योजनाएं बनाने और लंबी अवधि के प्रोजेक्ट्स पर रिसर्च करने के लिए बहुत अच्छा है। नवम भाव में स्थित बुध और गुरु आपके उच्च बौद्धिक कौशल और दूरदर्शिता को मजबूत सहारा देंगे, जिससे सीनियर्स आपके विचारों की सराहना करेंगे। हालांकि, दैनिक कार्यों को पूरा करते समय जल्दबाजी से बचें, अन्यथा छोटी-मोटी गलतियों को सुधारने में बाद में अधिक समय लग सकता है।

वृश्चिक राशि कार्यक्षेत्र में आज आपकी प्रेशर झेलने की क्षमता और क्राइसिस मैनेजमेंट का हुनर खुलकर सामने आएगा। आपके बॉस और सहकर्मी आपकी समस्या सुलझाने की कला और भरोसेमंद स्वभाव की उच्च सराहना करेंगे। छठे भाव में मंगल की उपस्थिति आपको कड़ी मेहनत करने की शारीरिक और मानसिक क्षमता देगी। ऑफिस की किसी भी प्रकार की गुटबाजी या सहकर्मियों के साथ तीखी बहस से खुद को पूरी तरह दूर रखें।

धनु राशि करियर के लिहाज से आज का दिन टीमवर्क और साझेदारियों के माध्यम से बेहतरीन परिणाम हासिल करने का है। सप्तम भाव में बुध और गुरु की उपस्थिति आपके व्यावसायिक संबंधों को बहुत मजबूत बनाएगी। आपके विचार सहकर्मियों और क्लाइंट्स के बीच आपको बेहद लोकप्रिय बनाएंगे। ऑफिस में महत्वपूर्ण कागजी कार्रवाई करते समय या फाइलों को संभालते समय जल्दबाजी न करें, बारीक डिटेल्स पर ध्यान दें।

मकर राशि करियर के मामलों में आज का दिन ज्यादा कॉम्पिटिटिव रहेगा और आप अपनी कार्यकुशलता साबित कर पाएंगे। छठे भाव में बुध, शुक्र और गुरु की मजबूत स्थिति आपके संवाद कौशल, टीमवर्क और कठिन समस्याओं को चुटकियों में हल करने की क्षमता को सपोर्ट करेगी। आप किसी भी प्रतियोगी स्थिति में बहुत अच्छा प्रदर्शन करेंगे। ऑफिस की आंतरिक राजनीति से पूरी तरह दूर रहकर केवल अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित रखें।

कुंभ राशि करियर के लिहाज से आज का दिन अपनी रचनात्मकता और रणनीतिक सोच का प्रदर्शन करने का है। पंचम भाव में बुध और गुरु की युति आपके आइडियाज और प्लानिंग को बहुत मजबूत बनाएगी, विशेषकर टेक्निकल, रिसर्च और क्रिएटिव फील्ड से जुड़े लोगों के लिए आज का दिन बड़ी सफलता लेकर आ सकता है। तृतीय भाव के मंगल आपके भीतर गजब का साहस और कार्यक्षेत्र में पहल करने की शक्ति देंगे। व्यावसायिक निर्णयों में भावनाओं को आड़े न आने दें।

मीन राशि करियर के मामले में आज का दिन बहुत ही धैर्य और निरंतर मेहनत से संभालने का है। आपकी राशि (लग्न) में शनिदेव की उपस्थिति आपसे कार्यस्थल पर कड़ा परिश्रम और मैच्योर व्यवहार की मांग करती है। चतुर्थ भाव में बुध और गुरु की स्थिति आपको नई रणनीतियां बनाने, फाइल मैनेजमेंट और भविष्य की व्यावसायिक प्लानिंग करने में बहुत मदद करेगी। कार्यक्षेत्र में किसी भी सहकर्मी के साथ बातचीत में जल्दबाजी या वाद-विवाद से खुद को दूर रखें।

ईश्वर एक, रूप अनेकः संकट के समय इष्टदेव कैसे करते हैं भक्तों की रक्षा

आप चाहें प्रभु राम को मानें, भगवान शिव को मानें, काली की आराधना करें अथवा किसी भी देवी-देवता, परन्तु जिसकी भी आराधना करें, पूर्ण निष्ठा भाव से करें, ताकि इष्ट के रूप में उस देवता की शक्ति कल्याण कर सके। जब हम किसी संकट में पड़ जाते हैं या हमें कोई सताता है, तब हम ईश्वर की प्रार्थना करते हैं। यही वह अटूट विश्वास है जो हमें अहसास कराता है, यकीन दिलाता है कि ईश्वर है। ईश्वर वह दिव्य शक्ति है जिससे सारा संसार चलता है।

वेदों के अनुसार परमपिता परमात्मा अर्थात् सबका पालनहार ईश्वर एक ही है, किंतु उसके रूप अनेक हैं। कहीं राम के रूप में ईश्वर को जाना जाता है तो कहीं कृष्ण के रूप में ईश्वर को पूजा जाता है, कहीं भगवान शिव के रूप में ईश्वर की वन्दना होती है तो कहीं काली, दुर्गा, सरस्वती के स्वरूप में ईश्वरीय शक्ति विद्यमान है। ईश्वर निराकार है, हम उसे देख नहीं सकते, किंतु उसका अहसास हमें होता है। दृष्टिभेद के कारण मानव, ईश्वर को भिन्न-भिन्न नामों से पुकारता है एवं अनेक स्वरूपों

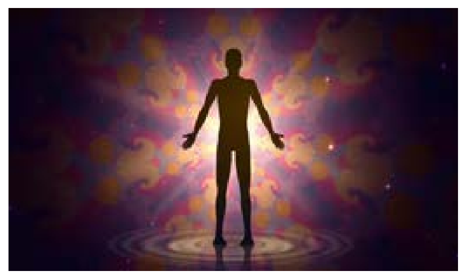

में देखता एवं पूजता है। जैसे व्यक्ति एक है, लेकिन विभिन्न रिश्तों के कारण परिवार के लोगों द्वारा पिता, भाई, चाचा, मामा, फूफा, दादा, बहनोई, भतीजा, पुत्र, भांजा, पोता, नाती आदि नामों से संबोधित होता है, वैसे ही ईश्वर भी भिन्न-भिन्न कर्ताभाव के कारण अनेक नाम वाला हो जाता है। जैसे जिस रूप में वह सृष्टिकर्ता है वह ब्रह्मा कहलाता है, जिस रूप में वह सर्वत्र व्याप्त है या जगत को धारण करने वाला है उसका नाम विष्णु है, जिस स्वरूप में वह विद्या प्रदान करता है, उसका नाम सरस्वती है, जिस रूप में वह समस्त धन-सम्पत्ति और वैभव का स्वामी है उसका नाम लक्ष्मी है। ईश्वर चेतना की वह शक्ति है जो ब्रह्माण्ड के भीतर और बाहर जो कुछ है, उस सब में व्याप्त है, संचालक होते हुए भी वह दिखाई नहीं देता क्योंकि वह सर्वव्यापी सर्वनियंत्रक है। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से जन्मकुण्डली में स्थित ग्रह नक्षत्रों के द्वारा विधि के विधान को समझकर उनके अनुसार कार्य-व्यवहार कर आकस्मिक हानि से बचा सकता है।

मनुष्य को जीवन में गो, गुरु, ब्राह्मण और संत सेवा से मिलती है सच्ची विजय : भागवताचार्य

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

विश्वकर्मा मंदिर गंज में चल रही सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा के पांचवें दिन भागवताचार्य पुष्कर परसाई ने श्रद्धालुओं को भक्ति, सेवा और संस्कारों का संदेश दिया। उन्होंने कहा जीवन में सच्ची विजय प्राप्त करने के लिए गो सेवा, गुरु सेवा और संत-ब्राह्मण सेवा अत्यंत आवश्यक है। जो व्यक्ति गो सेवा करता है, वह वास्तव में भगवान की सेवा करता है। कथा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे और पूरा वातावरण भक्ति रस में सराबोर हो गया।

प्रवचन में उन्होंने श्रद्धालुओं को जीवन का महत्वपूर्ण संदेश देते हुए कहा चिंता करने से केवल तनाव, बीपी और शुगर जैसी बीमारियां बढ़ती हैं, जबकि चिंतन करने से भगवान गोविंद की प्राप्ति होती है। उन्होंने कहा मनुष्य को अपने जीवन में चिंतन को अपनाना चाहिए, क्योंकि चिंतन ही आत्मिक उन्नति का मार्ग है।

श्रीकृष्ण बाल लीलाओं की झांकी ने मोह लिया मन

कथा के दौरान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का भावपूर्ण वर्णन किया। विशेष रूप से पूतना वध प्रसंग का वर्णन सुनकर श्रद्धालु भावविभोर हो उठे। इसके साथ ही मटकी फोड़ उत्सव का आयोजन किया, जिसमें बाल गोपाल की झांकी ने सभी का मन मोह लिया। भक्तों ने श्रीकृष्ण को मक्खन और छप्पन भोग अर्पित किया। कथा की विशेष बात यह रही श्रद्धालु अपने घरों से विभिन्न प्रकार के पकवान बनाकर मंदिर पहुंचे और बाल गोपाल को भोग लगाया। पूरे कार्यक्रम में भक्ति और उत्साह का वातावरण देखने को मिला।

इस अवसर पर विश्वकर्मा समाज समिति आमला के पदाधिकारी भी कथा श्रवण के लिए पहुंचे, जिनका भागवताचार्य ने सम्मान किया। आयोजन समिति ने श्रद्धालुओं से अधिक से अधिक संख्या में कथा में शामिल होकर पुण्य लाभ लेने की अपील की है।

भागवताचार्य पुष्कर परसाई ने अपने प्रवचन में कहा धर्म कार्यों में कभी बाधा नहीं डालनी चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया जो व्यक्ति धर्म कार्यों में सहयोग करता है, उसका जीवन स्वयं ही सफल हो जाता है। उन्होंने शुक्राचार्य के प्रसंग का उल्लेख करते हुए बताया कि धर्म कार्य में बाधा डालने पर परिणाम गंभीर होते हैं।

उन्होंने कहा भगवान की एक कथा भी मनुष्य को जीवन की सही दिशा दिखा सकती है और उसे अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाती है। परसाई ने कहा मनुष्य की दो आंखें होती हैं- एक ज्ञान की और दूसरी वैराग्य की। जब तक मनुष्य इन दोनों दृष्टियों से जीवन को नहीं देखता, तब तक वह सत्य को नहीं समझ सकता। उन्होंने कहा सूर्य के बिना जीवन संभव नहीं और चंद्रमा के बिना स्वास्थ्य संतुलित नहीं रह सकता, ठीक उसी प्रकार भगवान की कृपा के बिना जीवन अधूरा है। पं. परसाई ने गो माता की महिमा का विस्तृत वर्णन किया भागवताचार्य ने गो माता की महिमा का विस्तार से वर्णन करते हुए कहा गोमूत्र और गोबर अत्यंत पवित्र माने जाते हैं। उन्होंने बताया धार्मिक ग्रंथों में भी उल्लेख है गो उत्पादों से शुद्धिकरण किया जाता है। उन्होंने देशी गाय की सेवा को अत्यंत पुण्यकारी बताते हुए श्रद्धालुओं से गो सेवा अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा देशी गाय की पूंछ को बाल रक्षा कवच के समान माना है और यह धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संत सिंगाजी ने गुरु मनरंगगीर महाराज से दीक्षा ली : पं. रमेश

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

ग्राम आमढाना में चल रही संत शिरोमणि संत सिंगाजी महाराज की परचरी पुराण कथा के दूसरे दिन को पूरा क्षेत्र भक्ति रस में डूब गया। कथा स्थल पर सुबह से ही श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। संत सिंगाजी महाराज के जयकारों से पूरा पंडाल गूंज उठा और वातावरण पूरी तरह आध्यात्मिक हो गया। कथा प्रवक्ता रमेश महाराज (संत सिंगाजी धाम) ने संत सिंगाजी महाराज के जीवन, तप और आध्यात्मिक संदेशों का विस्तार से वर्णन किया। उन्होंने बताया संत सिंगाजी महाराज ने अपने गुरु मनरंगगीर महाराज से दीक्षा लेकर निर्गुण ब्रह्म की उपासना का मार्ग अपनाया और समाज को सत्य, प्रेम व भक्ति का संदेश दिया। महाराज ने कहा सच्ची भक्ति बाहरी आडंबरों में नहीं, बल्कि निर्मल हृदय और सत्कर्मों में निहित होती है। भजनों की प्रस्तुति के दौरान श्रद्धालु भावविभोर होकर झूम उठे। समापन पर महाआरती का आयोजन किया, जिसमें बड़ी संख्या में भक्तों ने भाग लिया। श्रद्धालुओं ने संत सिंगाजी महाराज के बताए मार्ग पर चलकर धर्म, भक्ति और मानव सेवा का संकल्प लिया।

एकलव्य महिला आईटीआई बैतूल में प्रवेश प्रक्रिया शुरू

30 जून तक रजिस्ट्रेशन, 10 ट्रेडों में एडमिशन, एसटी छात्राओं को नि:शुल्क छात्रावास

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल में शासकीय एकलव्य महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था (आईटीआई) कोसमी में नए सत्र के लिए प्रवेश प्रक्रिया शुरू हो गई है। पिछले सत्र में सभी 10 ट्रेडों में शत-प्रतिशत प्रवेश के साथ बैतूल जिले ने महिला प्रवेश के मामले में पूरे मध्यप्रदेश में पहला स्थान हासिल किया था, जिससे इस बार भी छात्राओं में खासा उत्साह देखा जा रहा है। संस्था में इलेक्ट्रिशियन, इलेक्ट्रॉनिक्स मैकेनिक, मैकेनिक कंप्यूटर हार्डवेयर, इनफॉर्मेशन कम्युनिकेशन एंड सिस्टम मेंटेनेंस, कोपा, स्टेनो हिंदी, स्टेनो अंग्रेजी, ऑफिस असिस्टेंट कम कंप्यूटर ऑपरेटर, फ्लोरीकल्चर एंड लैंडस्केपिंग तथा स्विंग टेक्नोलॉजी (कटिंग एंड टेलरिंग) जैसे रोजगारपरक ट्रेड संचालित किए जा रहे हैं। इन ट्रेडों में प्रशिक्षण प्राप्त कर छात्राएं देश-विदेश की प्रतिष्ठित कंपनियों में रोजगार प्राप्त कर रही हैं। प्रवेश अधिकारी रेवाशंकर पंडाग्रे ने बताया कि अनुसूचित जनजाति वर्ग की छात्राओं को निःशुल्क छात्रावास, भोजन सुविधा और प्रतिमाह एक हजार रुपए छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है। यह सुविधा दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राओं को तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने में बड़ी मदद कर रही है। संस्था के प्राचार्य अजीश पंद्रे के अनुसार, सभी वर्गों की छात्राएं प्रवेश ले सकती हैं, जबकि अनुसूचित जनजाति वर्ग की छात्राओं के लिए 50 प्रतिशत सीटें आरक्षित हैं। उन्होंने बताया कि स्विंग टेक्नोलॉजी ट्रेड में प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यता आठवीं पास निर्धारित की गई है। स्टेनो अंग्रेजी और फ्लोरीकल्चर एंड लैंडस्केपिंग जैसे ट्रेड बेहतर रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं। संस्था की छात्राएं वर्तमान में फॉक्सकॉन बेंगलुरु, टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स होसुर, प्रतिभा सिंटेक्स इंदौर, वर्धमान बुधनी और आईसर भोपाल जैसी प्रतिष्ठित कंपनियों में चयनित होकर कार्यरत हैं। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी छात्राओं ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। पिछले सत्र में छात्रा त्रिशा तावड़े, अरविंद कुमरे और निकिता तायवाड़े ने अपने-अपने ट्रेड में राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया था। फ्लोरीकल्चर एंड लैंडस्केपिंग ट्रेड के शिक्षार्थी आयुष इवने ने वर्ल्ड स्किल प्रतियोगिता में मेडल ऑफ एक्सीलेंस हासिल कर संस्था का नाम रोशन किया। संस्था प्रबंधन ने जिले के छात्र-छात्राओं से 30 जून तक डीएसडी पोर्टल पर ऑनलाइन पंजीयन कराने की अपील की है। प्रवेश संबंधी विस्तृत जानकारी के लिए संस्था से संपर्क किया जा सकता है।

11 हजार 678 करोड़ की परियोजना के बीच सुरक्षा अलर्ट बाहरी मजदूरों और किरायेदारों की जानकारी देना हुआ अनिवार्य

सारणी पुलिस की सख्ती होटल संचालकों, ठेकेदारों और मकान मालिकों को चेतावनी, जानकारी छुपाने पर होगी वैधानिक कार्रवाई

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

विद्युत नगरी सारनी में 11 हजार 678 करोड़ रुपये की विशाल परियोजना के आने के बाद शहर में बाहरी मजदूरों,किरायेदारों और अन्य व्यक्तियों की आवाजाही लगातार बढ़ रही है।ऐसे में शहर की सुरक्षा व्यवस्था और कानून-व्यवस्था को मजबूत बनाए रखने के उद्देश्य से सारनी पुलिस प्रशासन ने महत्वपूर्ण निर्देश जारी किए हैं।सारनी थाना प्रभारी जयपाल इनवाती ने जानकारी देते हुए बताया कि नगर पालिका परिषद सारनी के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित सभी होटल संचालकों,ठेकेदारों,मकान

मालिकों और किरायेदारों को बाहर से आकर रहने वाले व्यक्तियों की संपूर्ण जानकारी संबंधित थाना में देना अनिवार्य किया गया है।

उन्होंने कहा कि होटल में ठहरने वाले अथवा किराये के मकानों में रहने वाले बाहरी व्यक्तियों के आधार कार्ड की छायाप्रति,मोबाइल नंबर तथा पुलिस वेरिफिकेशन की जानकारी थाना सारनी में जमा कराना आवश्यक होगा। यदि कोई व्यक्ति या संस्थान यह जानकारी पुलिस को उपलब्ध नहीं कराता है,तो इसे कलेक्टर बैतूल के आदेश का उल्लंघन माना जाएगा और संबंधित के खिलाफ वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।थाना प्रभारी ने यह भी स्पष्ट किया कि नगर पालिका परिषद सारनी के 36 वार्डों सहित ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले सभी नागरिकों की जिम्मेदारी है कि वे अपने आसपास रहने वाले बाहरी व्यक्तियों की जानकारी पुलिस तक पहुंचाएं। वर्तमान समय में बड़ी औद्योगिक परियोजनाओं के कारण शहर में लगातार बाहरी लोगों का आगमन हो रहा है,ऐसे में सुरक्षा की दृष्टि से सतर्कता बेहद आवश्यक है।पुलिस प्रशासन का मानना है कि समय पर जानकारी मिलने से किसी भी संदिग्ध गतिविधि पर नजर रखी जा सकेगी और भविष्य में होने वाली संभावित आपराधिक घटनाओं को रोका जा सकेगा। पुलिस ने आम नागरिकों से भी अपील की है कि वे सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने में प्रशासन का सहयोग करें और किसी भी संदिग्ध व्यक्ति या गतिविधि की सूचना तत्काल प्रभाव के साथ थाना सारनी को दें।

तालाब में मछली पकड़ने फैलाया करंट बना मौत का कारण

बैतूल में दुर्घटना बताकर मामला दबाने की कोशिश का आरोप

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल में मछली पकड़ने के लिए तालाब में फैलाया गया बिजली का करंट एक युवक की मौत का कारण बन गया। चोपना पुलिस ने इस मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है, जिन्होंने लगभग तीन सप्ताह तक घटना को छिपाने का प्रयास किया था। पोस्टमार्टम रिपोर्ट और गवाहों के बयानों से सच्चाई सामने आई। यह घटना 7 मई 2026 को थाना चोपना क्षेत्र के ग्राम झोली-1 और झोली-2 के बीच स्थित आरईएस तालाब में हुई थी। तीन युवक बांस की लकड़ियों में बिजली के तार लपेटकर पानी में करंट प्रवाहित कर मछली पकड़ रहे थे। इसी दौरान 20 वर्षीय रूपेश मालाकार तालाब के पानी में फैले करंट की चपेट में आ गया। वह मौके पर ही बेहोश हो गया। परिजन और ग्रामीण उसे अस्पताल ले जा रहे थे, लेकिन रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गई। घटना के बाद आरोपियों ने मामले को दुर्घटना दिखाने का प्रयास किया। उन्होंने मृतक के पिता और शाहपुर अस्पताल के डॉक्टरों को बताया कि रूपेश की मौत तालाब में ऊंचाई से गिरने और सीने में चोट लगने से हुई है। शुरुआत में इसे एक हादसा माना गया, लेकिन पुलिस की विस्तृत जांच में सच्चाई सामने आई। चोपना पुलिस ने मर्ग जांच के दौरान घटनास्थल, प्रत्यक्षदर्शियों और परिस्थितियों की गहन पड़ताल की। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में डॉक्टरों ने स्पष्ट रूप से मौत का कारण "इलेक्ट्रोक्यूशन" यानी करंट लगना बताया। इस रिपोर्ट के आधार पर पुलिस ने मामले की जांच आगे बढ़ाई और तीनों आरोपियों को हिरासत में लिया। थाना प्रभारी रवि शाक्य के नेतृत्व में गठित विशेष टीम ने शुक्रवार को तीनों आरोपियों को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार किए गए आरोपियों में शिवा शाह (33), विशाल मंडल (22) और बंटी उर्फ सूरज शाह (21) शामिल हैं। ये सभी ग्राम झोली नंबर-2 के निवासी हैं। पुलिस ने आरोपियों को न्यायालय में पेश किया, जहां से उन्हें न्यायिक रिमांड पर भेज दिया गया है।

बैतूल कलेक्टर से मिलने पर अड़े ABVP कार्यकर्ताओं का हंगामा

पुलिस को धक्का देकर कलेक्ट्रेट में घुसे छात्र, फीस और छात्रावास मुद्दों पर प्रदर्शन

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP) के छात्र-छात्राओं और छात्र नेताओं ने शुक्रवार को कलेक्ट्रेट परिसर में जमकर हंगामा किया। कलेक्टर को ही ज्ञापन सौंपने की मांग पर अड़े कार्यकर्ताओं ने पहले पोर्च में धरना दिया, फिर मुख्य गेट पर तैनात पुलिस कर्मियों को धक्का देकर अंदर घुस गए और कलेक्टर चैंबर के पास पहुंचकर धरने पर बैठ गए। इसकी वजह से कलेक्ट्रेट परिसर में तनाव और हंगामे की स्थिति बनी रही। धक्का-मुक्की के दौरान दो पुलिसकर्मी भी दरवाजे के पास गिर पड़े। परिषद के कार्यकर्ता विभिन्न छात्र समस्याओं को लेकर प्रदर्शन करने पहुंचे थे। प्रशासन की ओर से एडीएम वंदना जाट, एसडीएम अभिजीत सिंह और तहसीलदार पूनम साहू को ज्ञापन लेने भेजा गया, लेकिन कार्यकर्ताओं ने उन्हें ज्ञापन देने से इनकार कर दिया। छात्र नेताओं का कहना था कि वे

अपनी मांगें सीधे कलेक्टर के सामने ही रखेंगे। काफी देर तक कलेक्टर के नहीं पहुंचने पर कार्यकर्ताओं का आक्रोश बढ़ गया और उन्होंने नारेबाजी करते हुए कलेक्ट्रेट के मुख्य गेट की ओर बढ़ना शुरू कर दिया। इस दौरान गेट पर मौजूद पुलिस बल ने उन्हें रोकने की कोशिश की, लेकिन कार्यकर्ता पुलिसकर्मियों को धक्का देते हुए अंदर प्रवेश कर गए। इसके बाद बड़ी संख्या में छात्र नेता कलेक्टर चैंबर के बाहर पहुंच गए और वहीं धरने पर बैठकर नारेबाजी करने लगे। स्थिति बिगड़ती देख एसडीएम, तहसीलदार और एसडीओपी मौके पर पहुंचे तथा कार्यकर्ताओं को समझाने का प्रयास किया।

अधिकारियों ने बताया कि कलेक्टर बैतूल में नहीं होने के कारण मौके पर नहीं पहुंच पा रहे हैं। काफी देर तक चली समझाइश और बातचीत के बाद कार्यकर्ता शांत हुए। अंत में उन्होंने एडीएम वंदना जाट को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में विद्यार्थी परिषद ने निजी स्कूलों की फीस सरकारी मानकों के अनुसार निर्धारित करने, विद्यार्थियों को एक ही दुकान से किताबें खरीदने के दबाव पर रोक लगाने, स्कूलों में शिक्षकों की पर्याप्त व्यवस्था करने तथा छात्रावासों में सीटें बढ़ाने की मांग की। इसके अलावा छात्रावासों में साफ-सफाई और गुणवत्तापूर्ण भोजन उपलब्ध कराने, शासकीय महाविद्यालयों में एमएससी, एमकॉम और एमए

पाठ्यक्रम शुरू करने तथा स्नातकोत्तर सीटें बढ़ाने की मांग भी उठाई गई। प्रदर्शन में जिला संयोजक देवेन्द्र पांसे, प्रांत कार्यकारिणी सदस्य मयंक घोरले, छात्रा प्रमुख राजेश्वरी सलामे, जिला छात्र प्रमुख करिना उइके, नगर मंत्री साहिल शेख, करण चढ़ोकार सहित बड़ी संख्या में परिषद के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित।
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949